लौंगिया मिरचाइ

(मैथिली नाटक)

लल्लन प्रसाद ठाकुर



भवानी प्रकाशन

पटना

तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य-लेखन प्रतियोगिता
मे प्रथम स्थान प्राप्त

लौंगिया मिरचाइ

(मैथिली नाटक)

लेखक
लल्लन प्रसाद ठाकुर



भवानी प्रकाशन
पटना, दरभंगा

"लौंगिया मिरचाइ"

प्रथम मंचन : भारतीय नृत्य कला मंदिर, पटना
१० अप्रील १९८६

दोसर मंचन : रवीन्द्र भवन, जमशेदपुर
३० जनवरी १९८७

पुरुष पात्र **प्रथम/दोसर मंचनक कलाकारगण**

१ घूटर —लल्लन प्रसाद ठाकुर

२ दिवाकर —चन्द्रकान्त

३ फूकना —रूप नारायण झा

४ मास्टर —देवचन्द्र झा/मोहन झा

५ नरेन्द्र —मोहन झा/पूर्णानन्द झा

६ गेना —कुमार भास्कर/अमितेश कुमार

७ प्रो० चन्द्रकान्त—रतीश चन्द्र मिश्र

स्त्री पात्र

१ स्त्री —कुमारी अनमना/कुमारी मधु झा

२ रीता — कुमारी अनीता मिश्रा

३ रश्मियाँ—कुमारी रश्मी रेखा/कुमारी नमिता

निर्देशक—लल्लन प्रसाद ठाकुर

सह निर्देशक— रतीश चन्द्र मिश्र

मंच व्यवस्था—(श्रीमती) कुसुम ठाकुर

प्रकाश संयोजन—पूर्णानन्द झा|जी विश्वनाथ

संगीत —'श्री राजा'

पहिल दृश्य

(स्थान पोखरिक भीड़)

(घूटर बाबू पोखरि सँ स्नान केने खूब जोर-जोर सँ दुर्गा पाठ करैत चलल आबि रहल छथि। कारक हानेंक स्वर सुनि चोंकि पड़ैत छथि।)

घूटर— अँय… इ कार सँ के आबि रहल अछि ? आइ-काल्हि एहि गामक तऽ भाग्ये बदलि गेल छैक। रोज क्योने क्यो कार कि जीप सँ अबिते रहैत अछि…आ' इ मास्टर अछि जे नाक पर माछी नहि बैसऽ दैत छै (जोर सँ चिकड़ि कऽ) औजी… गाड़ी ओतहि छोड़ि दियौ …आगू रस्ता नहि छैक… हँ… हँ ओतहि कात मे लगा दियौ…। (पुनः जोर-जोर सँ दुर्गा पाठ करऽ लगैत छथि। दोसर दिस सँ दिवाकर बाबूक एक हाथ मे ब्रीफ-केस नेने प्रवेश।)

दिवाकर—नमस्कार पंडित जी।

घूटर —नमस्कार। कहल जाओ…ककरा ओतऽ जेबाक अछि ? रघुनन्दन मास्टरक ओतऽ की ?

दिवाकर – जी… हम… घू… (मोन पारऽ चाहैत छथि…फेर जेब सँ एकटा चिट्ठी निकालि ओहि पर लिखल नाम पढ़ैत छथि)

घू …टर…टर बाबू ओतऽ जाय चाहैत छी।

घूटर —दुर्गा… दुर्गा… औजी… एहि गाम मे इ घू आ टर माने कि घूटर तऽ मात्र हमहीं छी…

दिवाकर—ओह… चिन्हि नहि सकलौं… नमस्कार…नमस्कार…

घूटर —औजी ई नमस्कार नमस्कार तऽ कैक बेर भऽ गेल परन्च, हम तऽ अपने कें चिन्हल नहि ?

दिवाकर—जी पहिल बेर जे भेट भऽ रहल अछि…दरअसल हम अपनेक सार…

घूटर —दुर्गा… दुर्गा …औजी अपने हमर सार कोना ? हमर तऽ मात्र एकेटा सार छथि …फ… दन्न ऽ ऽ ऽ माने कि फूदन बाबू…अररिया मे पी डब्लू डी आफिस मे बड़ा बाबू छथि… खूब पाइ कमाइत छथि…

गाम मे कोठापिटने छथि ''' बेटीक बियाह मे पचास हजार टाका गनलनि अछि। औजी दू मास पहिने तऽ भेट भेल छल'''' तऽ कहैत छलाह हम तऽ मात्र ईमानदारीक पाइ घूस मे लैत छी। आ कहैत छलाह जे हुनकर जे साहेब छथिन'''कोनदन इन्जीयर तऽ कहलनि

दिवाकर—जी एक्जक्यूटिभ इन्जिनियर

घूटर —हँ—हँ वैह''' हुनका दऽ तऽ कहैत छलाह जे एक नम्बरक घूसाह छथि। ठिकेदार सभक खून चूइस लैत छथि। सरकारी सिमटी लोहा सब बेच कऽ खा जाइत छथि।

दिवाकर—जी ? फूदन बाबू ई सभ कहैत छलाह ?

घूटर —हँ यौ ई सभ तऽ वैह कहैत छलाह। हम की जानऽ गेलियै औजी। आहिरेबा हमहूँ कतऽ भसिया गेल रही ''' औजी हम पुछैत रही जे अपने ''' सार'''

दिवाकर—जी अपने तऽ हमर पूरा गप सुनबे नहि कैल''' खैर इ पत्र पढ़ल जाओ (चिट्ठी दैत छथि)

घूटर —औजी हमरा लऽग मे कि चश्मा अछि जे चिट्ठी पढ़ब। अपनहि पढ़ि कऽ सुनाउ '' दुर्गा ''' दुर्गा ''

दिवाकर—जी बेश। (चिट्ठी पढ़ैत छथि) प्रिय घूटर बाबू, नमस्कार।

घूटर —नमस्कार ...नमस्कार

दिवाकर—जी ?

घूटर —आगू पढ़ल जाओ।

दिवाकर—जी '''। पत्रवाहक हमर एक्जक्यूटिव इन्जिनियर साहेब श्री दिवाकर बाबू छथि।

घूटर —जी ! अपने दिवाकर बाबू''' दुर्गा''' दुर्गा जी हम चिन्हि नहि सकलौं अनाप-सनाप बजा गेल।

दिवाकर—कोनो बात नहि। आगू सुनल जाओ (पुनः पत्र पढ़ैत छथि) हिनकर सज्जनता भलमनसाहतक कोनो दोसर उदाहरण नहि भऽ सकैत अछि। साहेब अपन बेटीक लेल मास्टर साहेबक भाई नरेन्द्र पर कथा लऽ कऽ जा रहल छथि। नरेन्द्र इनकम टैक्स आफिसर भऽ रहल छथि। हुनको

लेल अहि सँ बढ़ियाँ आओर कोनो कथा नहि भऽ सकैत छनि। हमर साहेबक बेटी रीता परम सुशीला, गृह कार्य मे दक्ष एवं बी० ए० पास छथि। कन्याक लेल हम गरेन्टी लैत छी। आशा अछि अपने ई कार्य सम्पन्न कराय पुण्यक भागी बनब। हमर साहेब लऽग पाइक कोनो कमी नहि। कार्य भऽ गेला पर साहेब अहांके उचित कमिशन देता।

अहांक,

फूदन

घूटर —हें हें हें की कहू हमर जे ई एक मात्र सार छथि से एक नम्बरक पाजी। कमीशन देताह ''' हुँ....

दिवाकर—घूटर बाबू एहि लेल तामस जुनि कैल जाय।

घूटर —औजी ई सार तऽ इहो लिख सकैत छलाह जे कार्य भऽ गेला पर उत्तम स्वागत सत्कार करताह '''

दिवाकर—सैह बूझल जाय''''उचित स्वागत सत्कारे बूझल जाय (जेब सँ दू सय टाका बहार कऽ दैत) ताधरि ई राखल जाओ।

घूटर —(टाका लैत) दुर्गा''''दुर्गा या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः। आब तऽ दुर्गाक आशीर्वाद भऽ गेल अछि आब तऽ अपनेक लेल किछु ने किछु करऽ पड़त''''

दिवाकर—जी किछु नहि''' कार्य अवश्य भऽ जाय सैह कैल जाओ।

घूटर —औजी''' ई मास्टर घाघ अछि ''' कतेको लोक आबि कऽ चलि गेल'''' केकरो नहि सुनलकनि। मुख्यमंत्रीक आदमी सेहो हुनकर भतीजीक लेल आयल छलनि''''

दिवाकर—ओह ! सुनैत छी जे मास्टर साहेब एकोटा पाइ नहि लेथिन भाईक बिवाह मे।

घूटर —ओ कहैत तऽ सैह छैक सभ कें। परन्च हमने चिन्हैत छियै ओकरा। बड़का भितर घुइयाँ अछि ई मास्टर''' खैर बचि कऽ जैत कतऽ दुर्गा दुर्गा''' अच्छा दिवाकर बाबू अपने कतेक टाका तक गनि सकैत छियै।

दिवाकर—जी पाइक कोनो चिन्ता नहि''' काज जैना हेतै तेना कैल जेतै कथुक कमी नहि रहतनि।

घूटर —अँय''' तथापि कतेक तक''''?

दिवाकर—डेढ़-दू लाख कैश लऽ लौथ''''तकरा बाद तऽ बिदाई मे आधुनिक सभ समान मोस्ट माडर्न एण्ड मोस्ट सफिस्टीकेटेड'''

घूटर —डेढ़ दू लाख ! दुर्गा दुर्गा ओजी दिवाकर बाबू एकटा बात पूछू अधलाह तऽ नै मानब ?

दिवाकर—पूछू—पूछू

घूटर —अपनेक विषय मे हमर शार जे कहने छलाह से तऽ सत्ते बुझाइत अछि'''

दिवाकर—जी '''अहिना चलैत छै। अपने ध्यान कार्य दिस लगायल जाओ। लाख-दूलाखक चिन्ता जुनि करू....

घूटर —दुर्गा''''दुर्गा हे माँ दुर्गा''''अहि जनम मे तऽ जरलाहा कप्पार देलह अगिला जनम मे हमरो पी० डब्लू डी० क इनजियर बना दिहऽ''''

दिवाकर—हें हें हें अपने तऽ अद्भुत लोक छी यौ घूटर बाबू'''

घूटर —अद्भुत लोक की ? ओजी अपनेक गप सुनि कऽ हमर तऽ हदासे उड़ि गेल अछि''''अँयओ एकटा गप हमरा नहि बुझायल ? अपने एतेक टाका गनि सकैत छी'''' खर्च कऽ सकैत छी''''तखन फेर एहन दरिद्र छिम्मरि बर अपना बेटी लेल तकैत छी ? ओजी मास्टर दूनू भाईक माथ पर दस कट्ठा सँ बेसी जमीन नहि''''एकटा छोटछीन टाटक घर। जाहि मे अपनेक बैसबोक स्थान नहि तऽ ओहि मे अपनेक बेटी कोना रहतीह ? मास्टर आ' ओकर घरबाली कोना कोना अपन पेट काटि कऽ नरेन्द्र के पढ़ौलक अछि से पूरा गाम जनैत अछि। ओ एतेक टाका मे तऽ अपने कोनो जमीनदारक बेटा''''

दिवाकर—अपने बुझबै ओ घूटर बाबू '''। ट्रेनिंग खतम भेलापर नरेन्द्र भऽ जेतह इनकम टैक्स आफिसर''''आ तीन चारि बरखक बाद ओ हमरा सन-तन कैकटा इन्जीनियर के कीन कऽ अपनपाकेट मे राखि सकैत छथि'''

घूटर —तेहेन साहेब भऽ गेल अछि नरेन्द्र ?

दिवाकर—जी'''

घूटर —तँ ने, एतेक लोक मारि कऽ रहल अछि परन्च एकटा बात''''लाख-दू-लाखक गप बिसरियौकऽ दोसरा लऽग नहि बाजब। हे, हम मात्र ४०-५० हजारमे ई काज करादेब''''लाख-दू-लाख सुनितहिं मास्टर तऽ पागल भऽ जैत।

(फूकनाक छिट्टा आ हाँसू नेने प्रवेश)

फूकना—गोर लगै छी लौंगिया मिरचाई पंडित। बलु के पागल भऽ जेतै ?

घूटर—हे रे फूकना तों मुँह सम्हारि कऽ बाजल कर, नहि तऽ कोनो दिन टाँग हाथ तोड़ि कऽ घऽ देबौ''''

फूकना—गलती भऽ गेलै माफी दऽ दिय, बलु ई मोटरगाड़ी बला पाहुन कतऽ सँ एलाह अछि ?

घूटर—कतौ सँ एलाह अछि ताहि सँ तोरा की ? जो अपन काज कऽर (फूकनाक मुँह बिचकाबैत प्रस्थान) हें हें हें ई सभ अपने जन-बनिहार थीक।

दिवाकर—से तऽ हम बुझि गेल। परन्च, ई तऽ अपने कें अद्भुत संबोधन देलक "लौंगिया मिरचाई पंडित"।

घूटर—जी''''जी''''दर असल हमरा बाड़ीमे ततेक ने लौंगिया मिरचाई फड़ैत अछि जे गामक सभ तोड़ि-तोड़ि कऽ लऽ जाइत अछि। हें हें'''' हें''' मिरचाइये छैक, ककरा रोकबै, लऽ जो जतेक लऽ जेबै, कड़ू तऽ तोरे लगतौ'''' हें''''हें''''हें''''खैर आब चलल जाओ पुजा पाठ कऽ लैत छी तखन मास्टरक ओतऽ चलल जेतै''' चलल जाओ—घबराऊ जुनि'''' घूटर अपनेक संग छथि माने दुर्गा अपनेक संग छथि। अपनेक काज हेबे करत।

दिवाकर—दुर्गा संग छथि कि लौंगिया मिरचाई ?

घूटर—हें '''हें''' हें '''अपने तऽ हमर सारे जकाँ मसखरी करऽ लगलौं, हें'''' हें'''हें''' चलल जाओ।

(दूनूक प्रस्थान। प्रकाश बन्न)

दोसर दृश्य

(मास्टरक घरक दलान। एकटा फूसक घर। एकटा टूटल कुर्सी आ एकटा खाट। मास्टर प्रवेश करैत छथि। आबि कऽ झोड़ा कुर्सी पर टंगैत छथि आ कुर्सी पर बैसि रहैत छथि)

मास्टर—फूकना''''फूकना'''

मास्टरक स्त्री—(प्रवेश) फूकना तऽ भोरे जे घास काटऽ गेल से कहाँ आयल अछि।

मास्टर—इहो फूकना हद्दे अछि। एकर बेटा के हम पढ़ा की दैत छियै ई तऽ भरि दिन हमरे सभक काज करैत रहैत अछि। एकर घर कोना चलैत छै से नहि जानि।

स्त्री—सैह तऽ''''कतेक इच्छा छै एकरा जे बेटा पढ़ि-लिख कऽ पैघ आदमी बनई। गेना तऽ छैहो बड़ तेज'''

मास्टर—ताहिमे कोन सन्देह''''एहन संस्कारी बच्चा तऽ बहुत कम देखबामे अबैत अछि। हे''''एकटा बात गिरह बान्हि कऽ राखि लिय जे जँ भगवतीक कृपा रहलनि तऽ ई छौंड़ा हमर नाम रोशन करत। नरेन्द्र जे नहि कऽ सकलाह से करत ई छौंड़ा।''''कोनो चिट्ठी तिट्ठी ?

स्त्री—नहि कहाँ आयल अछि।

मास्टर—नरेन्द्र केँ चिट्ठी लिखना तऽ कतेक दिन भऽ गेल। जबाब किएक नहि दऽ रहल छथि''''कन्यागत सभ तंग कऽकऽ छोड़ि देने अछि। लाख कहैत छियै जे हम पाइ नञि लेब से कथी लेल मानत क्यो'' लगैत अछि जेना जबर्दस्ती जेबमे ठूसि देत, पचास हजार, साठि हजार''लाख...दू लाख''''''

स्त्री—तऽ, नहि जानि कतऽसँ एतेक पाइ आबि गेल छै लोक सभकेँ ? तैयो तऽ सभ दिस हाहाकार मचल अछि। दहेजसँ लोक तबाह अछि।

मास्टर—यैँ तबाह अछि निर्धन सभ''''तबाह अछि इमानदारीक पाइ खायबला सभ। ओ किएक तबाह रहत जकरा घूसक पाइ अफरात भेटैत छैक'''' ओ किएक तबाह रहत जकरा ठिकेदारी मे कि व्यापार मे दू नम्बरक

पाइक ढेर लागल रहैत छैक ? अहि देशमे एकटा एहन वर्ग तैयार भऽ गेल अछि जकरा लऽग दू नम्बरक पाइक कोनो हिसाब नहि आ वैह सभ ई दहेज के एतेक बढ़ा चढ़ा देलक''''। जहाँ कोनो नीक लड़का निकलल कि बोली लागऽ लगैत अछि''''लाख दू लाख नहि जानि आओर कतेक। ओकरा सभक सोंझा मे ई गरीबहा सभ कतऽ सकत। भलेही ओकर बेटी कतबो सुन्नरि किएक नहि हो, कतबो पढ़ल-लिखल, शुशील किएक नहि हो। जनैत छी आइ जे हम डिक्लेअर कऽ दियै जे नरेन्द्रक विवाहमे हमरा पाइ चाही तऽ डेढ़-दू लाख तक दै बला सभक लाइन लागि जायत''''

स्त्री—दूर''''एहनो क्यो काज करय।

मास्टर—अरे हम तऽ एकटा गप कहल। हम तऽ विवाहमे लेन-देनक घोर विरोधी छी।''''। नरेन्द्रक चिट्ठी आबि जाइत तऽ कोनो नीक ठाम बिबाह स्थिर कऽ दितियैन। मात्र एकेटा इच्छा अछि जे विवाह कोनो पैघ आफिसरक ओतऽ होनि।

स्त्री—हे'''हम तऽ कहब जे अहाँ इहो पागलपन छोड़ि दिय। कोनो गरीब घरक बेटी ताकि कऽ बौआक विवाह कऽ दियौन।

मास्टर—जखने बुझबै तखने ने बाजब''''यै, विवाहदान मे स्टेटस देखल जाइत छैक। नरेन्द्र पैघ अफसर छथि तऽ हुनकर स्त्री पढ़ल-लिखल, तौर-तरीका बाली, सभा-सोसाइटी मे नरेन्द्रक संग देबयवाली होयबाक चाही। ओ कि हमरा जँका मास्टर छथि जे कोनो मास्टरक बेटी सँ ठीक कऽ दियनि।

स्त्री—हमर बाबूजी मास्टर नै हेड मास्टर छथि।

मास्टर—ओफ्फो—अरे जहिया ओ नोकरी पकड़ने हेता तहिया तऽ मास्टरे ने रहल हेता कि सोझे हेडमास्टरे भऽ गेल छलाह ?

स्त्री—से तऽ हमरा नहि बूझल अछि।

मास्टर—अहाँ बकलेल छी''''जाउ एक कप चाह बनाकऽ नेने आउ''''

स्त्री—हँ-हँ''''हम तऽ बकलेल छी। बौआ तऽ अहींक ने भाई छथि। तैं सभ अधिकार अहींके'''

मास्टर—आ-हा-हा, अहाँ तऽ खिसिया गेलहुँ। नरेन्द्र जे आदर जे सम्मान अहाँके दैत छथि ओ तऽ'''हमरा तऽ मात्र पँच भाई बुझैत छथि परन्च अहाँके तऽ सदिखन माय समान पूजा करैत छथि। अहाँ जतऽ कहबै तत्तै हेतैन नरेन्द्रक बिबाह। हम तऽ मात्र नरेक स्टेटसक हिसाबे''''

स्त्री—हम की बुझबै ई सभ बात। अहीं सोचि बिचारि कऽ तय करब। हम चाह मेने अबैत छी (प्रस्थान)

(गेना लालक प्रवेश)

गेना—(चिट्ठी दैत) मास्टर साहेब प्रणाम! पोस्टमैन साहेब ई चिट्ठी देलनि अछि।

मास्टर—चिट्ठी ला-ला हँ ई तऽ नरेक चिट्ठी अछि (फाड़ैत) गेना, तों कने अपन बाबू के बजौने तऽ आे''''

गेना—जी '''(प्रस्थान)

मास्टर—(चिट्ठी पढ़ैत) यै सुनैत छी'''अरे जल्दी आउ

(स्त्रीक प्रवेश)

अरे नरेन्द्रक चिट्ठी आबि गेल, जनैत छी की लिखने छथि''''? लिखलनि अछि अहि मासक अंत धरि हमर पोस्टिंग भऽ जैत। आब हमर विवाह निश्चित कऽ सकैत छी। भाई अहाँ तऽ पिता तुल्य छी आ भौजी तऽ मायो सँ बढ़ि कऽ। अहाँ लोकनि हमर बिवाहक लेल हमरा सँ पूछी से उचित नहि। जतऽ उचित बूझी, ओहिया उचित बूझी निश्चित कऽ दिय। देखू अहाँक बौआ कतेक आज्ञाकारी छथि।

स्त्री—से अहाँ ने देखू। तैं खूब सोचि-बिचारि कऽ विवाह ठीक करियौन। जाहि सँ नीक जँका जिनगी बीत जाइन'''

मास्टर—हँ से तऽ ठीके कहैत छी''' अहि पत्रके पढ़लाक बाद तऽ जिम्मेदारीक बोझ आओर बढ़ि गेल अछि। खैर, बाबा बैद्यनाथ सभ नीके करताह'''

(नेपथ्य सँ घूटरक स्वर)

घूटर—दुर्गा '''दुर्गा '''ई बाबा बैद्यनाथ के किएक तंग कऽ रहल छहुन हौ मास्टर?

मास्टर—घूटर भाई आबि रहल छथि (स्त्रीसँ) अहाँ आङन जाउ। (स्त्रीक प्रस्थान) आउ-आउ घूटर भाई'''

(घूटर आ दिवाकर बाबूक प्रवेश। दिवाकर बाबूक संगमे ब्रीफकेश छनि। ओ मास्टर साहेब के नमस्कार करैत छथि।)

मास्टर—नमस्कार नमस्कार'''' एतऽ बैसल जाओ। (आ अपने खाट पर घूटरक संग बैसि जाइत छथि)

घूटर भाई हिनका चिन्हलियैन नहि?

घूटर—हौ, आइ कालिह तों ककरो चिन्हैत छहक। हमरा चिन्हैत छह कि नहि?

मास्टर—कहू तऽ भला'''' अहाँ तऽ''''

घूटर—तऽ बूझि लऽ जे हिनका आ हमरामे कोनो फर्क नहि। हमर सार के चिन्हैत छहुन ने? '''हुनके ई साहेब दिवाकर बाबू एजकूटी इनजीयर पी डब्लु डी। हुनके पत्र लऽ कऽ आयल छथि। कार सँ अयलाह अछि। पोखरिक भीड़ लऽग छोड़ि देने छथिन कार के। हमर सार तऽ अपने आबयबला रहथि हिनका संग परंच ओ अकस्मात बिमार पड़ि गेलाह'''' हे नरेन्द्रक हेतु अपन कान्याक प्रस्ताव लऽ कऽ आयल छथि।

मास्टर—ओ'''

दिवाकर—जी ई हमर परिचय थीक (जेबसँ कागत बहार कऽ दैत छथि)

घूटर—परिचय की देखैत छहुन'''एहन सुन्दर परिचय कतऽ भेटतह?

दिवाकर—मास्टर साहेब '' दरअसल हम माया मिडिया बला गपमे विश्वास नहि करैत छी। आ नहि तऽ दस-बीस आदमीक भीड़ जमा करबामे। चाही तऽ जत्तै कथामे जाइ दू-चारिटा गाड़ी आ दस बीस नीक व्यक्ति कें लऽ कऽ जा सकैत छी परन्च, हम बुझैत छियै जे '''

मास्टर—जी ई तऽ बड़ उत्तम गप। कन्यागत आ बरागत सोझा सोझी बैसि कऽ गप करथि तऽ ई जे पचास तरहक प्रेसर, कि सम्बन्धी वर्ग सँ मनमुटाव से सब काफी हद तक दूर भऽ सकैत अछि।

दिवाकर—बाह! बहुत उत्तम बिचार। तखन हम तऽ अपने लऽग अर्जी दऽ देल'''' आब अपनेक जे विचार''''

घूटर—जे बिचार की? अहिसँ बढ़ियाँ कथा कतऽ भेटतऽ? कान्याक विषय मे हमर सार गरेन्टी लिख कऽ पठौलनि अछि। परम सुशीला, गृह कार्यमे दक्ष, बी० ए० पास बढ़ियाँ रिजल्ट '' देखबामे अति सुन्नरि''' बाप के

देखिते छहुन"" बड़का आफिसर"'कथुक कमी नञ्ि, जे मंगबहुन से सभ देवाक लेल तैयार""

मास्टर -(तमसाइत) घूटर भाई""अहाँ तऽ जनैत छी हमर कोनो मांग नञि। हम दहेजक एकदम विरुद्ध छी।

दिवाकर —जी हमर एहन कोनो अभिप्राय नहि, मात्र अपनेक आशीर्वाद चाही (जेबसँ फोटो बहार कऽ दैत छथि) ई हमर बेटी रीताक फोटो अछि "' राखि लेल जाओ, रीता केँ देखबाक विचार हो तऽ "'

मास्टर—छी: छी: छी: केहेन गप करैत छी, ई देखा देखी, दहेज पर दहेजक मांग "' ई सभ तऽ समाज के गर्त मे ढकेलने जा रहल अछि आ अपने सभ सन विद्वान, उच्च घरक व्यक्ति सभ सेहो "'

दिवाकर जी की कैल जाय। बेटी बला छी। जतहि जाइत छी दहेजक मांग, कान्या देखेबाक प्रस्ताव, हम जँ अड़िकऽ रही जे पाइ नहि गनब" बेटी के नहि देखायब तऽ हमर बेटीक बिबाहे नञ्ि हैत।

मास्टर—हँ सेहो ठीके कहैत छी। पता नहि कोना एहि सभक अन्त होयत। (फूकनाक घासक छिट्टाक संग प्रवेश)

फूकना —की यौ लीगिया निरच ई पण्डित जी, तखन पुछलहुँ जे कतऽ सँ पाहुन आयल छथि तऽ बलु बजैत की भेल छल ?

घूटर —मास्टर एकरा मना कऽ बहुक जे हमरा सँ नञ्ि भिड़य"" तोँ एकरा बहसा कऽ राखि देने छहुक।

मास्टर— फूकना "खैर बाद मे गऽर करब" पहिने आँगन सँ जलपान आ चाहक

दिवाकर—मास्टर साहेब आइ ई सभ छाड़ि देल जाय"

मास्टर—आइ से कोना हैत अपने पहिल बेर""

घूटर —अरे आब तऽ अबिते रहबुन। पहिने गप्प तऽ फाइनल करह""

मास्टर—दिवाकर बाबू हमरा किछु समय देल जाय। हमरा लोकनि बिचारि कऽ अपने के सूचित करब।

घूटर —सूचित करब ? दुर्गा-दुर्गा एतेक अगधैल जकाँ किएक गप्प करै छह हौ ? जे फाइनल करबाक छह से अखने करह।

दिवाकर —घूटर बाबू रहऽ दियौन "किछु समय तऽ आवश्यक छैक, बिचार बिमर्श करबाक लेल। नरेन्द्रजी सँ पत्राचार करबामे किछु समय तऽ लगबे करतैन।

घूटर—ओ की समय लगतैन ? हम नहि जनैत छी की ? हिनकर बात के नरेन्द्र कहियो टार नहि सकैत छनि।

दिवाकर—आइ से तऽ छोट भाईक घर्मे आ नीक कुल-शीलक यैह तऽ परिचय"" तथापि मास्टर साहेब जहिया आज्ञा करता हम पहुँचि जैब। (मास्टर सँ) मात्र एकटा अनुरोध से जँ अपने बचन दी जे मानि लेब तऽ हम हिम्मत करी""

मास्टर—दिवाकर बाबू बचन होइते छैक पूरा करबाक लेल। हम कोनो तरहक वचन अखन नहि दऽ सकैत छी।

दिवाकर—अपने हमरा गलत बूझि रहल छी। हम विवाहदानक विषयमे कोनो वचन नहि मांगि रहल छी। दरअसल अपनेक व्यक्तित्व, एहि इलाकामे अपनेक शिक्षाक लेल समर्पण, छात्र लोकनि के अपन पाइ दऽ कऽ मदति करब, ई सभ हमरा चारू दिससँ पता लागि गेल अछि। हमहूँ किछु तेहने घरसँ आयल छी""एक साँझ घर मे भोजनक ठेकान नहि। परम आदरणीय शिक्षक छलाह महेशबाबू"' आजीवन विवाह नहि कयलनि।"" अपन कमाइक सभ धन निर्धन मेधावी छात्रक पाछाँ खर्च कऽ देलनि। हमहूँ जे छी से हुनके कृपा सँ। परन्च, जहिया हमर स्थिति नीक भेल महेश बाबू नहि रहलाह।"'अपने केँ देखिकऽ हुनके स्मरण भऽ गेल।"'एहि बैग मे पचास हजार टाका लऽ कऽ निकलल रही जे कतहु आवश्यकता परल त गनि देब।""हमर निवेदन यै जे ई टाका अपने राखि लेल जाय।

मास्टर —(तमसाइत) :—दिवाकर बाबू।... होश मे बाल करू। अपने जनैत छी हम दहेजक एकदम विरुद्ध छी, अपने जा सकैत छी।

दिवाकर—हमरा गलत नहि बूझी मास्टर साहेब। अहि टाका के बिबाह-दान सँ कोनो मतलब नहि। हम तऽ मात्र ई चाहैत छी जे अहि टाका सँ अपने निर्धन छात्रक लेल कोष बनाबी आ' कतेको नरेन्द्र के पैदा करी"" अपने विश्वास करू नरेन्द्रक संग हमर बेटीक विवाह हो अथवा नहि हो हमरा एको रत्ती दुःख नहि हैत (पैर पकड़ैत) कृपया हमर अनुरोध नहि ठुकराबी।

मास्टर —ई की कऽ रहल छी""अपने ?

दिवाकर--मास्टर साहेब हम अपनेक पैर तधरि नहि छोड़ब जा धरि अपने अहि टाका के स्वीकार नहि करब। अपनेक रूप मे हमरा साक्षात महेश बाबूक दर्शन भऽ रहल अछि ""हम हुनकर ऋण सँ उऋण होमय चाहैत छी (कानऽ लगैत छथि)

घूटर —इनजीयर साहेब सपने ई की कऽ रहल छी ? विवाह दानक कोनो गप्पे नाहि आ पचास हजार टाका बयो अहिना""

दिवाकर—अपने चुप्प रहल जाओ ""अहि मे विवाह-दानक कोनो प्रश्न नञ्रि"" ई हमर प.प पुण्यक हिसाब अछि। जँ मास्टर साहेब हमरा एतेक कृतघ्न बुझैत ""

मास्टर —नहि-नहि उठल जाओ""अपने सन व्यक्तिक हृदय तोड़ब महापाप हैत ""अहि टाका के अपनेक इच्छानुसार खर्च कैल जायत।

दिवाकर—हम अपनेकेँ कोना धन्यवाद दी से नहि जनैत छी। हे भगवान महेश बाबूक आत्मा आइ कतेक प्रसन्न होइत हेतैह। बेश मास्टर साहेब, आब जाइत छी। आब आज्ञा देल जाओ।

मास्टर —जी बेश।

घूटर —तो देखिहक जल्दी सँ नरेन्द्रकेँ""

दिवाकर—(तमसाइत) :—घूटर बाबू हम एक बेर कहलहुँ ने जे अहि सभसँ बिबाह दानक कोनो संबंध नहि""मास्टरो साहेब के दु:ख हेतैन्ह आ' महेश बाबूक आत्मा तऽ कलपि जेतैन, चलू "(दूनूक प्रस्थान)

(फूकनाक लोटा गिलास नेने प्रवेश)

फूकना —आहिरेबा, ई सभ तऽ चलि गेला तऽ फेर ओ हलुआ ककरा लेल बनै छैक ""नीके भेल चलि गेला। मलिकिनो मलिकिनी ओ सभ तऽ चलि गेला।

मास्टर —फूकना ई जे दिवाकर बाबू आयल छलाह

(स्त्रीक प्रवेश)

अहूँ आउ,""देखू ई फोटो पसिन्न अछि ?

फूकना —मास्टर साहेब""एगो बात कहू ? बलु ई काज मे घूटर पण्डित परल छथि, हमरा तऽ मोन नहि मानैऽ है—।

मास्टर —तो तऽ बेकार मे बदनामकरैत रहैत छहुन।

हुनका हमरा सँ कतेक प्रेम छनि। सभ दुःख सुख मे उपस्थित रहैत छथि।

फूकना —अहाँ कहियो नञ्रि बूझि सकब बलू। सोझ आदमी केँ टेढ़ बात बुझेनाई मोश्किल। मुदा एगो बात सुनिलिय बलू शादी बियाह अपने जेसन आदमी के ओतऽ करक चाही""।

ई कार बला, पेंट सूट बला आदमी आ संग मे लौंगिया मिरचाई, एक बेर खा लेब तऽ पानि पिबैत-पिबैत""।

मास्टर —अच्छा अच्छा। जो तोरा के बुझाबय, जो अपन काजकर""।

(फूकनाक प्रस्थान)

(स्त्री सँ)—कहू पसिन्न परल फोटो ?

स्त्री —फोटो मे तऽ बड़ सुन्नरि लगैत छथि, परंच ई फूकनाक गप्प" एहेन-एहेन पैंच लोकके देखि कऽ डरऽलगैत अछि। ई बेसा केहेन छै। हुनकर छुटिगेलनि की ?

मास्टर —हा ""हा""हा छूटि नञ्रि गेलैन। अहि मे पचास हजार टाका छैक। एकरा नीक जकाँ राखि दियौक; कालिह-भोर मे मधुबनी बैंक मे जमा कऽ देबै।

स्त्री —पचास हजार टाका ? अहाँ""अहाँ पाइ लऽ कऽ बौआक विवाह""

मास्टर —ओफ्फो" ई से पाइ नहि थीक। अहाँ के कि विश्वास होइत अछि जे हम पाइ लऽ कऽ भाईक विवाह करायब ? एकरा राखि दियौक, हम आबैत छी तऽ स्थिर भऽ कऽ बुझा देब ! मास्टरकप्रस्थान)

(प्रकाश बन्न होइतअछि)

दृश्य तेसर

(पोखरिक भीड़ । दिवाकर बाबू आ घूटर बाबूक प्रवेश)

घूटर —अपने तऽ हद्द कऽ देलौं बाप रे बाप पचास हजार टाका अहिना दऽ देल ....ई मास्टर तेहेन सनकी अछि जे........

दिवाकर —पंडितजी अपने नहि बुझबै ई तऽ बोर देलियैक अछि....आ अहि मे मास्टर के फँसयऽ पड़तैन । अपने स्थिर भऽ कऽ तमाशा देखू । मात्र अपनेक ई काज जे धीरे-धीरे सौंसे गाम मे प्रचार करा दियौक जे नरेन्द्रक बिबाह एक लाख टाका मे हमरा ओतऽ निश्चित भऽ गेल छन्हि प्रचार तेना कऽ होयबाक चाही जे अपनेक नाम नहि आबय । (जेबसँ टाका बहार करैत) ई दू हजार टाका आओर राखल जाय, बिबाह भेलाक बाद पाँच हजार टाका आओर अपनेक कमीशन माने कि अपनेक स्वागत सत्कार मे....।

घूटर —हैं ....हैं....हैं । अपने निश्चिंत रहल जाओ । आब हमरा सभटा बुझा रहल अछि ।

दिवाकर—बेश तऽ आब आज्ञा दिय । परंच जे कहल से मौन राखब । बीच बीच मे मास्टर साहेब सँ भेट कऽ-कऽ पत्र द्वारा सभ सूचित करैत रहब । बेश नमस्कार ।

(दिवाकर आगू बढ़ि जाइत छथि । घूटर रुपैया गनऽ लगैत छथि । प्रकाश बन्न होइत अछि)

दृश्य—चारिम

(मास्टरक घरक दलान । गेनालाल पटिया पर बैसिकऽ पढ़ि रहल अछि । चन्द्रकान्तक प्रवेश ।)

चन्द्रकान्त—मास्टर साहेब, मास्टर साहेब, विद्यार्थी, मास्टर साहेब घरमे छथि ?

गेना—आउ ने, बैसू ने । मास्टर साहेब कतौ गेल छथि अबिते हेता ।

(चन्द्रकान्त कुर्सी पर बैसि जाइत छथि)

चन्द्रकान्त—की नाम अछि विद्यार्थी ? केकर बालक छी ?

गेना—जी हमर नाम गेनालाल, हमर बाबूके नाम फूकन मरर ।

चन्द्रकान्त—ओह, फूकनाक बेटा ! ओह विश्वास नहि होइत अछि, हमरा चिन्हैत छी ?

गेना—हँ । अहाँ चन्द्रकान्त बाबू, पटना मे प्रोफेसर छियै ।

चन्द्रकान्त—वाह । अहाँ तऽ बड़ सुन्दर बजैत छी । अच्छा ई तऽ कहू जे पटना की छै ?

गेना—पटना शहर छै आ बिहारक राजधानी छै ।

चन्द्रकान्त—वाह-वाह अहाँ तऽ बड़ तेज छी ।

मास्टर (प्रवेशक संग)—के ? भाई ! कहिया एलौं ?

चन्द्रकान्त—आइये भाई, कहू की हाल चाल ?

मास्टर—सभ ठीक ठाक । कहू कतेक दिनक छुट्टी मे आयल छी ?

चन्द्रकान्त—आब परमानेन्ट छुट्टी मे....

मास्टर—से की ?

चन्द्रकान्त—भाई रिजाइन कऽ देलौं । तंग आबि गेल छी, ई युनिवर्सिटीक वातावरण सँ । एतेक दुषित, छीः, छीः, छीः, मात्र पालिटिक्स, पढ़ाई लिखाई सँ कोनो सरोकार नहि । भगवानक कृपा सँ बाप पित्ती बहुत छोड़ि गेल छथि, आब गामे रहब, अपन लिखा पढ़ी करब ।

मास्टर—ओह ।

चन्द्रकान्त—भाई, ई फूकनाक बेटा तऽ बड़ संस्कारी बुझाइत अछि।

मास्टर—बड़ तेज, डिस्ट्रीक्ट स्कीलरशीप भेटलैक अछि। आब एकरा नेतरहाटक टेस्ट दियाकऽ ओतहि पठेबाक बिचार अछि।

गेना—हम कतौ नै जैब, हम तऽ अहीं लऽग पढ़ब मास्टर साहेब।

मास्टर—रौ एना जिद्द नहि करबाक चाही, ओहि इसकूल मे तोहर जिनगी बनि जेतौ।

गेना—नहि नहि हम कतौ नै जायब। हम अहीं लऽग पढ़ब, हम कतौ नै जैब।

मास्टर—अच्छा-अच्छा ठीक छै जो अखैन आब काल्हि अबिहें....

(गेना बस्ता समेटिकऽ प्रस्थान करैत अछि)

चन्द्रकान्त—भाई पढ़बियौ एकरा हम चलैत छी, आब तऽ भेंट होइते रहत।

मास्टर—अरे बैसू भौजी सँ भेंट भेल की नहि ? हे यै सुनैत छी, देखू के आयल छथि।

(स्त्रीक प्रवेश)

चन्द्रकान्त—गौर लगै छी भौजी।

स्त्री—कोना छी ?

चन्द्रकान्त—कहुना जीबि रहल छी। अपन कहू।

स्त्री—हमर की ?

चन्द्रकान्त—अहाँ के की ? अहींक तऽ दुनियाँ अछि। देखैत नै छी सेठानी जकाँ चतरल जा रहल छी।

स्त्री—धुर...अहाँ के ठठ्ठा सुझैत अछि, आब तऽ बूढ़ भेलौं... आबो तऽ।

चन्द्रकान्त—बूढ़ ? हा हा हा, हे यै भौजी, भाइ छथि एहिठाम तऽ की कहू... कहियो असगर मे भेंट हो तखैन ने बुझबै हम केहेन बूढ़ छी।

मास्टर—हा हा हा, भाइ एकटा गप्प तऽ कहबे नहि केलौं। नरेन्द्रक विवाह स्थिर कऽ देलियैन। दिवाकर बाबू ओतय। अररिया में पी० डब्ल्यू० डी० मे एजक्यूटिव इन्जिनियर छथि। अहूँके बरियाती चलऽ पड़त।

चन्द्रकान्त—वाह, उत्तम गप्प। परंच, भाइ बरियाती हम नहि जा सकब।

मास्टर—से कियैक ?

चन्द्रकान्त—भाई अहाँ तऽ जनिते छी जे हम स्पष्टवादी छी। हम ई सिद्धान्त बनौने छी जे जाहि विबाह मे लेन-देन भेल हो हम ओहि मे सम्मलित नहि हैब, आ' अहाँ अहि बिवाह मे टाका लेलियैक अछि।

मास्टर—भाई के कहलक इ गप्प ?

चन्द्रकान्त—के कहत। सौंसे गाम जनैत अछि जे अहाँ एक लाख टाका गनेलियैक अछि।

स्त्री—आब बुझियौ। हम तऽ पहिने कहैत रही जे ई आदमी ठीक नहि अछि।

मास्टर—अहाँ चुप रहू। एहेन सभ्य आदमीक विषय मे अनुचित गप नहि बाजी।... भाई हम सत्ते कहैत छी, एकटा टाइ नरेनक विवाहक लेल नहि लेने छी। ओ तऽ दिवाकर बाबू पचास हजार टाका जबर्दस्ती....

चन्द्रकान्त—जबर्दस्ती की ? इहो सभ जबर्दस्ती होइत छैक ? खैर, अहांक गप्प अछि, अहाँ जानी। आब हम चलैत छी, काल्हि भेंट हैत। (प्रस्थान)

(मास्टर माथ पर हाथ धऽ कऽ बैसि रहैत छथि)

स्त्री—ई सभ घूटर भाईक काज छौ। सौंसे गाम मे हल्ला करबा देलैनि.... अहाँ हुनकर टाका आपस कऽ दियौन।

मास्टर—नै....नै....ओ एतेक नीक काजक लेल, कतेक नेहोरा कऽ कऽ ई टाका देलैनि अछि, हम कोना आपस कऽ सकैत छी। ई घूटर भाई केर सेहो कोनो दोष नहि। हम तऽ अपने कैक गोटा के कहलियैक जे पचास हजार टाका दिवाकर बाबू, गरीब छात्रक हेतु दऽ गेल छथि, आब लोक दोसरे माने लगा लिए तऽ हम की कऽ सकैत छी। खैर, हमरा सभहक आत्मा पवित्र अछि लोक के जे मोन होइ से बाजऽ दियौक।

स्त्री—हमरा तऽ डऽर लगैत अछि। कहीं बौआ सेहो इ सुनिकऽ तमसा ने जाथि। हे, हम तऽ फेर कहब जे कोनो गरीब घरक सुशील कनियाँ ...

मास्टर—(तमसाइत) :— अहाँ बेर-बेर एके रट किएक लगौने छी ? अरे स्टैटस कोनो चीज होइत छैक। सज्जन व्यक्ति के हम बचन दऽ देने छियैनि.... विवाहक दिन निश्चित भऽ गेल, आब अहाँ इ तेसरे राग अलापि रहल छी।... आब अहि विषय मे कोनो गप नहि हेबाक चाही।

स्त्री—जहाँ किछु बाजू कि तमसा जाइत छी, पढ़ल-लिखल नहि छी तँऽ किनै ...जे मोन हुए से करु...

(बजैत प्रस्थान प्रकाश बन्न होइत अछि)

दृश्य पाँचम

(एकटा कुर्सी पर मास्टर साहेब बैसल छथि आ नरेन्द्र बगलमे ठाढ़ छथि। फूकना घर सँ अटैची बेडिंग आदि समान सभ आनि आनिकऽ राखि रहल अछि। मास्टर साहेब रहि-रहि कऽ चश्मा निकालि आँखि पोछि रहल छथि। दरबज्जाक पाछू नरेन्द्रक नव विवाहिता आ मास्टर साहेबक स्त्री ठाढ़ छथि)

फूकना—(ऊच्च स्वर मे):—सभटा समान बहार भऽ गेलै, मिलाकऽ देखि लिय बलू। कथू छूटि जैत तऽ फेर कहब जे बलू फूकने चोराकऽ अपन घर लऽ गेल।

नरेन्द्र—(जेब सँ एकटा पुर्जी बहार कऽ समान मिलबैत) हँ सभटा समान तऽ आबि गेलौ खाली एकटा शृंगारदानी रहि गेलौ जो नेने आ·······

(फूकनाक प्रस्थान)

मास्टर—नरेन्द्र

नरेन्द्र—जी।

मास्टर—अहाँक विवाह भेना अखैन मात्र बारह दिन भेल अछि आ द्विरागमनक मात्र पाँच दिन। काल्हि भरफोड़ी छल आ आइ जा रहल छी, कोना-दन लगैत अछि"""विवाह आ द्विरागमनक गहमा गहमी सँ आइए सभ निवृत भेल अछि। बौआसिन हाथक बनाओल भोजनो नहि केलहुँ किछु दिन रहि जैतौं तऽ·······

नरेन्द्र—भाई"""छुट्टी"""एतेक पैघ रिस्पॉसिबलीटी·······

मास्टर—हँ से त ठीके जतेक छुट्टी लऽ कऽ आयल छी ताहि सँ बेशी नहि बढ़ेबाक चाही। अनुशासन एकरे कहैत छैक। परन्च, कनियाँ के जँ छोड़ि दितियैनि·······

(पर्दाक दोसर दिस)

स्त्री—कनियाँ भाई तऽ ठीके कहैत छथि"""अखन तऽ ठीक सँ हम सभ अहाँ के देखबो नहि केलहुँ अछि।

रीता—नहि-नहिई नहि बुझथिन, जे हमरा बिना नरेन्द्र के कतेक दिक्कत भऽ जेतैन, नहि रहबाक ठेकान ने खेबाक ठेकान।

फूकना—(हाथ मे पिकदानी नेने प्रवेश) बलू एगो बात पूछू छोटकी मालकिनी"""जे बलू आइ सऽ बारह दिन पहिने नरेन बौआ के तऽ बलू कोनो दिक्कते नै होइ छलैनि बलू इ बारह दिन मे ई कतऽ सऽ दिक्कते-दिक्कत····

मास्टर—फूकना" बेशी बकर-बकर नीक नै अपन काज कर·······

फूकना—ठीके तऽ हमरा बकर-बकर करबाक कोन काज हे लिय नरेन बौआ अपन पिकदानी बलू।

नरेन्द्र—पिकदानी! फूकना तोरा ई पिकदानी आन' के कहलकौ?

फूकना—अहीं तऽ बलू कहलौं जे एगो इएह बँचि गेल अछि·······

नरेन्द्र—ओफ्फ हम कहलियौ शृंगारदानी शृंगार बक्सा आ तों·······

रीता—कौ तऽ हम नेने छी (पर्दाक पाछुसँ बजैत छथि। मास्टर साहेब अवाक भऽ जाइत छथि: फेर अपना कें संयत करैत""")

मास्टर—फूकना देख तऽ इ रमुआ रिक्सा लऽ कऽ नञि एलौ अखन धरि। ट्रेनक टाइम भेल जा रहल छै।

घूटर—(प्रवेशक संग)"""अधैर्य जुनि होअह हौ मास्टर। रमुआ आ' सोखिया दून्‌क रिक्सा आबि रहल छ। दोकान लऽग रिक्सा ठाढ़ कऽ कऽ चाह पिबैत छल। पुछलियै तऽ कहलक जे नरेन बौआ सकरी जेथिन टिरेन पकड़ऽ लेल। हौ नरेन्द्र दू टा रिक्सा किएक मंगौने छह। बौह मारते समान देखैत छियह।

नरेन्द्र—भाई असल मे····

घूटर—ओ हो हो बुझलिय, बुझलिय सपरिवार जा रहल छह किने?

नरेन्द्र—जी।

घूटर—जेबेक चाही"""जेबेक चाही"""आब मास्टर के कथीक कमी"""तोरा पढ़ा लिखाकऽ बड़का हाकिम बनाइये देलखुन आ' तोहर विवाह मे पचास हजार टाका भेटलैनि ताहि सँ बाँकी जिनगी·······

मास्टर—धूटर भाई···· ···

घूटर—तमसाइत किएक छह ? हमरा सँ कोनो गलत गप बजा गेल की?

फूकना —अहाँ सँ बलू गलत गप किएक बजाएत ''हरिश्चन्द्रक बाद तऽ अहि नें जनम लेलौ यौ लौंगिया मिरचाइ पण्डित ,

घूटर —देख रे फूकना, तोहर दिमाग बहुत बढ़ि गेल छौ, तोरा इ मास्टर माथ पर रखने रहैत छौक तऽ जुनि बूझ जे… ….। रौ, तोरा सन-सन के हिम्मत नहि होइत छलै जे हमर बाप दादाक डयोढ़ी पर पैऽर धरैति ।

मास्टर —फूकना

फूकना – जी मास्टर साहेब ।

मास्टर —जो अपन काज कर । सुन''आँगन सँ पासबुक आ चेकबुक मंगने औ''''
हमर इसकूल बला झोड़ा मे हैत ।

(फूकनाक प्रस्थान संग मे मास्टरक स्त्रीक प्रस्थान)

घूटर —ई नीक केने छह जे पाइ पासबुक मे रखने छह । आइ कालिक जमाना तऽ '' '' अँय हौ मास्टर तोरा इनजीयर साहेब सँ पचास हजार दियौ देलियह परंच, हौं तऽ एकटा छदाम विवाह मे खर्च नञि केलहक, सबटा डकारि लेलहक '' ''बाह रे इनजीयर साहेब कथी कैल एक पाइ तकर चिन्ता''''आ केहेन बढ़ियाँ इन्तजाम बाह'''घर नञि भेटलैन ताहि सँ की बर तऽ फस्ट क्लास प्राप्त भेलैनि ।

(फूकना पासबुक आनिकऽ दैत अछि)

मास्टर —(चेकपर हस्ताक्षर करैत) नरेन्द्र राखू इ पासबुक । अहि मे सबटा पाइ जमा करा देने छी-मधुबनी स्टेट बैंक मे । ट्रान्सफर करालेब (पासबुक नरेन्द्रक हाथ मे दऽ दैत छथि । नरेन्द्र पासबुक उनटा-पुनटा कऽ देखैत छथि)

नरेन्द्र —पचास हजार ! भाई पूरा पचास हजार ! भाई विवाह मे जे खर्च भेल ?

फूकना —से हमरा स' ने पूछू बलु '' मास्टर साहेब अपन बलु किछन तऽ कहै छै जे परडीडेन्ट फण्ड सँ बहार कऽ कऽ बलु अहाँक वियाह मे खर्चा केलैनि ।

नरेन्द्र —अँय, भाई ई अहाँ की केने छी प्रभिडेन्ट फंड सँ''''

मास्टर —नरेन अहाँ हमर भाइये नहि बेटा सेहो छी । अहाँ नै तऽ माय के देखलौं आ ने बाबू के''''''''

(रिक्शा आबि गेल अछि फूकना समान सभ उठा कऽ लऽ जा रहल अछि)

नरेन्द्र —भाई इ पासबुक अहाँक थीक अहाँ राखू । इ हम नञि लऽ सकैत छी ।

मास्टर —नरेन जिद्द नञि करी '' ''''

नरेन्द्र —नञि भाई नञि ई हम नञि लऽ जा सकैत छी ।

घूटर —केहेन असभ्य छह । मास्टर तोरा पढ़ा-लिखाकऽ एतेक पैघ आफीसर अही लैल बनेलखुन जे हिनकर आज्ञा के उलंघन करऽ, मास्टर कहै छथुन्ह तऽ पासबुक राखि लह ।

नरेन्द्र —(भौजी लऽग जाईत छथि) भौजी''' भौजी अहीं भैया के बुझबियौन''''
ई पासबुक राखि लिय भौजी''''

स्त्री —बौआ राखि लिय आ' हमरा सभ के अहिठाम पाइक काजे कोन हैत ।

नरेन्द्र —नञि भौजी नञि ई हम नञि कऽ सकैत छी । ई पासबुक अहाँ लऽ लिय भौजी । एतेक छोट जुनि बनाउ हमरा ।

रीता —(नरेन्द्रक हाथ सँ पासबुक छिनैत) बहिन तऽ ठीके कहैत छथि । एतऽ पाइक कोन काज हेतैं । ओतऽ नव घर बसेबाक अछि । पचीस तरहक खर्चा हैत''''तऽ कतऽ सँ आनब ? आब की बुझैत छियै जे हमर पापा फेर देतऽ औता ?

नरेन्द्र —रीता'''' '''' '''' ''''

रीता —चिचिया किएक रहल छी '' ''''?

मास्टर —नरेन समय भऽ गेल, अहाँ सभ रिक्शापर बैसू ।

(नरेन्द्र आ रीता उठैत छथि, प्रकाश बन्न होइत अछि ।)

छठम् दृश्य

(मास्टर माथ पर हाथ धऽ कऽ बैसल छथि। स्त्रीक आँङ्गन सँ प्रवेश)

स्त्री —आब उठू ने। स्नान कऽ कऽ पूजा पाठ कऽ लिय ने। कतेक अबेर भेल जा रहल अछि।

मास्टर —हुँ…बारह बाजि गेल अछि।…। आइ मोन कोनादन लागि रहल अछि। १४-१५ दिन सँ कतेक रमन-चमन छल। आइ घर एकदम उदास लागि रहल अछि। नरे जखन सोझां मे रहैत छथि तऽ कतेक मोन प्रफुल्लित रहैत अछि…हे यै हमर झोड़ा मे एकटा पोस्ट कार्ड हैत…नेने तऽ आउ, नरे के चिट्ठी लिख दैत छियैन…

स्त्री —चिट्ठी लिखबैइ…? अहाँके की भऽ गेल अछि आइ? बौआ तऽ अखन आधे रस्ता मे हेता, समस्तीपुर सेहो नहि पहुँचल हेता आ। अहाँ चिट्ठी लिखबैनि?

मास्टर —ठीके कहैत छी। भोरे मे तऽ गेलाह अछि लगैत अछि जे कतेक दिन भऽ गेलैनि हुनका गेना………यै अहाँके उदास-उदास नहि लागि रहल अछि?… …किछु कहलौं…नहि…अरे अहाँ तऽ कानि रहल छी?……पता नहि आइ हमर दिमाग के की भऽ गेल अछि……अन्ट-सन्ट बजने चलल जा रहल छी……अरे अहाँ के उदास नहि लागत तऽ केकरा लगतै…अहाँ तऽ मायो सँ बढ़िकऽ छियैनि नरे के…जन्म नञ्जि देलियैन…परंच

(गेनालालक बस्ता टंगने प्रवेश)

गेना —मास्टर साहेब प्रणाम।

मास्टर —के गेना………आ बैस…पटिया बिछा ले…

स्त्री —गेना…आइ जो…कालिह सँ पढ़ऽ अबिहें…आइ हिनका अराम करऽ दहुन।

मास्टर —नहि-नहि…पढ़ऽ दियौ एकरा…तावति हम स्नान कऽ लैत छी…गेना पटिया बिछा ले… …

(गेना पटिया बिछा कऽ बैसैत अछि आ पढ़ैत अछि)

गेना —ई सवाल नहि बुझाइत अछि…(मास्टर साहेब एकटक आकाश दिस देखि रहल छथि)

गेना —(पुन:) मास्टर साहेब…… मास्टर साहेब ई सवाल नहि बुझाइत अछि…

मास्टर —हूँ… …ला…देखियौ तऽ……

गेना —मास्टर साहेब…आइ अहाँ के मोन खराब अछि की? अहाँ एतहि पड़ि रहू…हम पैर जाँति दैत छी…

मास्टर —नहि-नहि कोनो खास बात नहि तो अपन पढ़ाई कर…

गेना —नहि मास्टर साहेब…हम अहाँक पैर जँतबे करब

(जबर्दस्ती कुर्सीपर सँ उठेबाक प्रयास करैत अछि।

मास्टर —हा…हा…हा बड्ड जिद्दी भ' गेल छँ रे गेना…हा…हा…हा यै…सुनैत छी इ गेना ओहिना जिद्द करैत अछि जेना नरे बच्चा मे करैत छलाह…भाई आइ हम अहाँक पैर जँतबे करब…हा…हा…हा…

गेना —(पैर जँतैत) मास्टर साहेब। छोटका मालिक अहाँ सँ झगड़ा कऽ कऽ किएक चलि गेलाह?

मास्टर —झगड़ा…नहि तऽ। के कहलकौ तोरा?

गेना —बाबू कहैत रहै जे छोटका मालिक अपन कनियाँक डरे झगड़ा कऽ कऽ चलि गेलाह।…। मास्टर साहेब लोक बियाह किएक करैत छै?

मास्टर —गेना भगवानक एहि सृष्टि के चलेबाक लेल लोक के बिवाह करऽ पड़ैत छैक। परन्च कहियो काल इ बिवाह बड़ दु:खदायी होइत छै—अपनो लेल आ समाजोक लेल…

(स्त्रीक कड़ू तेलक बाटी आ गमछा नेने प्रवेश)

गेना —मास्टर साहेब हम बियाह नहि करब आ कहियो अहाँके छोड़ि कऽ नञ्जि जैब।

स्त्री —हँ रौ…दौड़ले बियाह करबें-फेर के पुछैत अछि एहि बुढ़वा मास्टर के?

मास्टर —अरे जाय दियौ…अखैन बच्चा छै…अखैन की बुझऽ गेलै…

गेना —मास्टर साहेब…हम सब बुझैत छियै…बियाहक बाद लोकके घरबाली सँ डऽर होइत छै…घरबाली जैह कहैत छै सैह करऽ पड़ैत छै।

स्त्री —बाप रौ बाप ''' रौ केकरा देखलहीए घरबाली सँ डरैत ? तोरा मास्टर साहेब के हमरा सऽ डऽर होइत छनि की ?

गेना —मलिकिनी '' अहाँ दून् गोटे तऽ देवता छी । आन सभके तऽ सँह हाल छैं''' हमरा बाबू के सेहो माय सँ बड़ डऽर होइत छैं · छोटको मालिक तऽ छोटकी मलिकिनी के डरे—

स्त्री —गेना '' खबरदार जे बौआक विषय मे एहन गप्प बजलैं । के कहलकौ तोरा ई सभ''' ?

गेना —बाबू कहैत रहै''''

स्त्री --इ फूकना अपना के की बुझैत अछि ? अनाप सनाप'' (फूकनाक प्रवेश) फूकना बौआक विषय मे तों सभ की बजैत घुरैत छैं ?

फूकना —ठीके तऽ बजै छी बलु''' अहाँ दून् गोटे तमसायब तऽ तमसाउ''''मुदा छोटका मालिक आ छोटकी मलिकिनी जे केलैन बलु से हमरा एको पाइ नीक नहि लागल''

स्त्री --- तोरा नीक लगलो नइ लगलो सँ कोन फर्क'' बेसी''''काबीलतीक दावा छौ तऽ जो अपन घरक रस्ता पकड़''' हमरा कोनो जरूरत नहि अछि तोहर''''

फूकना —नै मलिकिनी '' एना नञि निकालू बलू ।

मास्टर —जाय दियौ '' ई अनपढ़ अछि '' हरेक बात के अपना हिसाबे लैत छैं ''' फूकना जो अपन काज कर''' गेना जो काल्हि सँ अबिहें''''

गेना —(सकुचाइत) मास्टर साहेब अहाँक मोन खराब अछि''' अहाँ कतौ नञि जाउ । घरे मे आराम करू''''

मास्टर — गेना एमहर सुन (अपना लऽग बजा ओकर माथ पर हाथ राखि दैत छथि) ''' नहि जायब '' कतौ नहि जायब'''' घरे मे रहब''' आब तों'''' जो'''

(गेना अपन बस्ता उठा कऽ जाइत अछि)

(प्रकाश बन्द)

(एतऽ 'मध्यान्तर' देल जा सकैत अछि)

२।१।म्याँ

दृश्य सातम

(नरेन्द्रक शहरक डेराक ड्राइंग रूम । साधारण । एकटा सोफा सेट । कमरे एकटा टूल पर टेलिफोन । नरेन्द्र आफिस जेबाक लेल तैयार छथि ।)

नरेन्द्र—रीता '''' — रीता''''

रीता—(प्रवेशक संग) अरे एतेक चिचिया किएक रहल छी '''' ?

नरेन्द्र—रीता हमर जेब मे पाँच सय टाका छल ?

रीता—हँ ''' ओ तऽ हम पछिला मास जे साड़ी उधार लेने रही तेकरे देबाक लेल निकालि लेलौं ।

नरेन्द्र—ओह''' ओ तऽ हम भैया के पठेबाक लेल रखने रही आ ।'''' ''''

रीता—घरक तऽ खर्च नीक जकाँ चलिते नहि अछि आ अहाँ के भैया भौजी सुझैत छथि—हुँ''''' अहाँक पोस्ट पर जे सभ छथि हुनकर सभक रहन-सहन देखैत छियैनि । बगले मे तऽ श्रीवास्तव साहेब छथि ''' ....

नरेन्द्र—ओफ ओ रीता'''''' अहाँ बुझैत किएक नहि छी जे अनकर देखा-देखी करबा मे लोक के गर्त मे डूबऽ पड़ैत छैक ।

रीता—के कहैत अछि गर्त मे डूबऽ ? नहि डूबू ''' तखन भैया भौजीक चिन्तो नहि करू....

नरेन्द्र—केना नहि करू—ओ हमर भाई-भौजीयेटा नहि छथि । ओ तऽ हमर मायो-बाप सँ बढ़ि क' छथि'''' आइ आठ मास भऽ गेल हमरा सभ के गाम सँ एना '''हरेक मास दरमाहा सँ पाइ पठबऽ चाहलौं परन्च,''' जे अपन पेट काटि कऽ हमरा पढ़ौलक प्राभिडेन्ट फण्डक पाई सँ हमर बिबाह मे खर्च केलक तकरा हमर दरमाहाक मधुरो नसीब नै....

रीता—हूँ । नसीब नै'''दरमाहाक सभ पाईक मधुर कीन लिय आ' जाउ अपन भाई भौजी के खुआ दियौन''' सँह रहय तऽ हमरा कियैक अनलहुँ ।

नरेन्द्र—ओह रीता—तमसाउ जुनि ''कने स्थिर मोन सँ सोचू कि हमरा सबहक ई कर्त्तव्य नहि जे हुनका लोकनि के खुश रखबाक प्रयास करी, हुनका लोकनि लेल चिन्तित रही—

रीता —चिन्ता खाली हमहीं सब करी। हुनका लोकनि के हमरा सभक कोनो चिन्ते नहि। आइ धरि एकटा पोस्टकार्डो नहि लिख भेलैन जे हमरा लोकनि कोना छी ?

नरेन्द्र —हमहूँ तऽ एकोटा पत्र लाजे नहि लिखलियैनि अछि। सभ बेर सोचैत छी जे पाइ पठेबनि तऽ संगे चिट्ठी लिखबनि परञ्च··· खैर हम चलैत छी····आफिसक समय भऽ गेल··· (प्रस्थान)

(प्रकाश बन्न होइत अछि)

(पुनः मंच पर प्रकाश। रीता एकटा पत्रिका पढ़ि रहल छथि। पार्श्व सँ दरबाजा ठकठकेबाक एवं पोस्टमैनक स्वर। रीता बढ़ि कऽ दरबज्जा फोलैत छथि आ पोस्टमैन सँ चिट्ठी लऽ लैत छथि)

रीता —ओफ्फ फेर चिट्ठी····पता नहि ई चिट्ठी एनाइ कहिया बन्द हैत (फोलि कऽ पढ़ैत छथि।) पार्श्व सँ मास्टरक स्त्रीक स्वर मे चिट्ठी पढ़ल जाइत अछि)

प्रिय बौआ,

शुभाशीष।

अहाँक भैया कतेको पत्र दऽ चुकल छथि परञ्च एकोटाक जबाब नहि। आइ दू मास सँ बिछाओन पकड़ने छथि अहाँक भैया। स्कूल सँ छुट्टी नेने कतेक दिन चलत ? पोद्दार डाक्टर कहैत छथिन जे टी० बी० भऽ गेल छनि। हमरा तऽ किछु नहि फुराइत अछि। घरक खर्च, दवाईक खर्च चलब आब बहुत मोशकिल भऽ गेल अछि। बौआ अहाँ एना किएक तमसाएल छी हमरा सब सँ कोनो गलती भऽ गेल हो तऽ क्षमा करब। परञ्च कम सँ कम एक बेर अपन भाई के देख जाउ। ओ तऽ मात्र अहाँक नाम लैत रहैत छथि।

अहाँक,

भौजी

रीता —हूँ ··· अहाँक भौजी (चिट्ठी फाड़ि कऽ टूकड़ा-टूकड़ा कऽ दैत छथि) रश्मियाँ····रश्मियाँ

रश्मियाँ —(प्रवेशक संग) जी मेम साहेब।

रीता —(फाड़ल चिट्ठी दैत) एकरा बाहर मे फेंक दही—

(रश्मियाँ लऽ कऽ चलि जाइत अछि, प्रकाश बन्न)

दृश्य आठम

(भोरका समय। नरेन्द्र सोफा पर बैसल एकटक उपर देखि रहल छथि। रश्मियाँ चाह राखि जाइत अछि। कनेकाल बाद)

रीता —(प्रवेश) अरे··· सामने चाह राखल अछि अहाँ एकटक छत के निहारि रहल छी ?

नरेन्द्र—अँय रीता··· भरि राति निन्न नहि भेल···· तेहेन-तेहेन सपना देखलहुँ अछि भैया-भौजीक विषय मे

रीता — बस फेर शुरू भऽ गेलौं —भोर होइते भैया-भौजी

नरेन्द्र—रीता····रीता कनेकाल हमरा असगरे छोड़ि दिय।

रीता —बाह असगरे छोड़ि दियऽ तऽ हम की देबाल सँ गप्प करी। भोरे-भोर लोक नीक-नीक गप्प करैत अछि आ अहाँ के तऽ बस असगरे छोड़ि दिय···सुनु आइ रवि अछि····चलू कतौ घूमऽ चलैत छी····

नरेन्द्र—आई ? नहि····फेर कोनो दोसर दिन····

रीता —हूँ। अच्छा आई बजार चलू फ्रीज किनबाक अछि···

नरेन्द्र — फ्रीज ? फ्रीज कीनब से पाई कतऽ अछि ?

रीता —पाई ! पाई Installment मे देबै—कोन एहन दोकानदार अछि जेकरा अहाँ कहि देबै आ ओ Intallment पर नहि देत···आखिर अहाँ Income Tax Officer छी····

नरेन्द्र—रीता अहाँ हमर स्वभाव जनैत छी तखन फेर एहन गप्प करैत छी····

रीता —राखू अपन स्वभाव अपने लऽग। हमरो लोक चिन्हैत अछि हम अपने जा कऽ आई फ्रीज अनबे करब···

नरेन्द्र—रीता खबरदार जे एहन काज केलौं तऽ ठीक नहि हैत

रीता —किएक ठीक नहि हैत··· अहाँ जे करी से सभ ठीक आ हम गलत। हमर पापा देबऽ चाहैत छथि से नँ लेब। अपनो नँ कीनब··· हूँ हमर पापा बला पचास हजार टाका बैंक मे रखने छी दुनू भाई मिल कऽ आ हमर घर···

नरेन्द्र—रीता हमर भाई पर कलंक जुनि लगाउ ओ तऽ पासबुक दऽ देने छथि""परन्च ओ हुनकर पाई छनि। ओ एकटा नीक काजक लेल अहाँक पापाक अनुरोध स्वीकार कऽ ओ पाइ लेलनि। हम ओहि मे सँ नहि छू सकैत छी"" अहाँ के फ्रीज ने चाही ठीक छै पन्द्रह दिनक भीतर फ्रीज आबि जैत

रीता—सत्ते"" सत्ते कहैत छी ?

नरेन्द्र—हाँ"" आबि जैत""

(पार्श्व सँ घूटरक स्वर—नरेन्द्र हौ नरेन्द्र)

नरेन्द्र—अरे ई तऽ घूटर भाई बुझाइत छथि (दरवज्जा फोलि) अरे घूटर भाई अहाँ"" आउ-आउ"" रीता अहाँ भीतर जाउ घूटर भाई आबि रहल छथि

रीता—के घूटर भाई ? ओहो वैह ने जे हमर विवाह मे पापा के मदत केने छलथिन"" आ जे पचास हजार टाका वला पासबुक दिया देने रहथि

नरेन्द्र—(तमसाइत) रीता""
(घूटर प्रवेशक संग)

घूटर—दुर्गा"" दुर्गा""हौ एना क्यो घरवाली पर तमसाय—घरवाली पर तामसक अर्थ अपना आप पर तामस""हौ घरवाली होइत छै, अर्द्धांगिनी""ताहि हिसाबे तामस तऽ अपने आधा अंग पर""कह' कोना छह ?

नरेन्द्र—नीके छी। घूटर भाई, भैया आ भौजी कोना छथि ?

घूटर—हौ हम तऽ मास भरि सँ बाहर छी""नूनू बतऽ चाईबासा गेल रही ""आब' तऽ नहि दैत छलाह। आ तेहने आवेशी हमर पुतोहु""आब आपस होइत रही तऽ सोचलहुँ दू चारि दिन तोरो अन्न खेने चली"" बौआसीन एक गिलास जल चाही।

रीता—जी तुरत""(प्रस्थान)

घूटर—हौ नरेन्द्र एतेक पढ़ि लिख गेलह। एतेक पैघ पोस्ट पर छह तथापि ई दकियानूसी विचार। हौ हम तऽ पहिल बेर जखन चाईबासा गेल रही तऽ नूनूक घरवाली के कहि देलियैन जे हे बौआसीन ई गाम नहि

छैक, शहर छैक""अहिठाम पर्दा करबाक कोनो औचित्य नहि आब ऐखह बेटा पुतोहु पोता, पोती सब संगे बैसि कऽ खाईत छी""

नरेन्द्र—परन्च भाई, ई उचित नहि""

रीता—(अलक संग प्रवेश)—की उचित नहि ? घूटर भाई दस दिन एतऽ रहताह—अहाँ चलि जैब आफिस"" हम ओहि घर मे आ घूटर भाई एहि घर मे माथ पर हाथ धऽ कऽ की बैसल रहब ?

नरेन्द्र—ओफ्फ ""(उठैत) अहाँ के के बुझाबय। घूटर भाइ, हम कने अबैत छी।
(घर चल जाइत छथि)

घूटर—बड़ तमसाह भऽ गेलाह अछि नरेन्द्र" बौआसीन प्रसन्न छी किने।

रीता—की प्रसन्न रहब। हिनका तऽ भोर सँ साँझ धरि भैया-भौजी भैया-भौजी जपबा सँ फुर्सते नै""

घूटर—ओह ! तऽ इ मास्टर अखन धरि"" सैह तऽ कहैत रही जे एतेक पैघ अफसर आ घर मे किछु नहि। इंजीयर साहेब तऽ कहैत छलाह नरेन्द्र दू-तीन साल मे कैकटा इंजीयर के कीन सकैत छथि।

रीता—हूँ""। पापा कत' हमरा धकेल देलैनि !""! दरमाहा सँ संतोष करऽ पड़ैत अछि""। चाहथि तऽ की नहि कऽ सकैत छथि। लाख-दू लाख तऽ मास दू मास मे""मुदा ई तऽ हरिश्चन्द्रक""

घूटर—भाई छथि"" सैह ने।"" मुदा मास्टरो के तऽ हालत बड़ खराब छै। आई दू मास सँ टी० बी० लऽ कऽ घर मे पड़ल अछि" पोद्दार डाक्टर कहैत छल जे आरो कोनो""कोनो बिमारी छै"" नरेन्द्र के नहि कहलियैन जे""

रीता—नीके कैल।""। आ हे हिनका किछु कहबो जुनि करियौन नहि त'

घूटर—मुदा मास्टर तऽ कैकटा चिठ्ठी लिखलकै अछि। नरेन्द्र के""पता तऽ हेबे करतैन"" भऽ सकैत अछि अहाँ के नहि कहने होथि""

रीता—(लऽग आबि)"" घूटर भाई हिनका किछु बुझल नहि छनि, सभटा चिठ्ठी धरक पता सँ अबैत छै। आ' हिनका हम एकोटा नै देलियैनि अछि""

घूटर —बाह'''बाह''''खूब नीक काज केने छी'''' आब बुझाइत अछि अहाँ इनजीयर साहेबक असली बेटी छी''''हमर सार अहाँक बिषय मे लिखने छलाह जे खूब पढ़ल-लिखल, गृह कार्य मे दक्ष चतुर'''सै सभ उचिते''''परन्च, बौआसीन'''हम घूटर। कने हमरो पर खेयाल राखब ''असल मे घूटर के पेटे बलाय। घूटर के जँ नीक-नीक व्यंजन सँ पेट नहि भरैत छनि तऽ पेट मे बात पचबे नहि करैत छनि''''

नरेन्द्र—(प्रवेशक संग) की नहि पचैत अछि घूटर भाई ?

घूटर—हौ बौआसीन माउस मंगेबाक गप करैत छलीह तऽ सैह कहलियनि जे बाहरक माउस तऽ हमरा पचिते नहि अछि। नीक हेतह जे माछे लऽ आबह''''आहे'''अहि सभ ठाम मोशकिल सँ तकला पर जमीरी नेबो भेटैत छैक, से अवश्ये नेने अबिअह'''ता हम कने डोल-डाल सँ निवृत होइत छी'''' केमहर अछि बाथ रूम बौआसीन ?

रीता —हँ'' हँ अबियौ ने एमहर ओहि दिस''''

(घूटरक प्रस्थान)

नरेन्द्र—आइ रवि कऽ ई माछ माउसक गप किएक उठेलहुँ'''' अखन तऽ रहबे करताह दोसर दिन अनितहुँ''''

रीता—ओ बेचारे एतेक दूर सँ एलाह अछि''' हमर की अहाँ के ने भाइ छथि।

नरेन्द्र—भाइ''''ओह''''हँ भाई छथि''लाउ झोड़ा''''

रीता —अपने किएक जैब'''चपरासी''''

नरेन्द्र—ओ हमर बापक नोकर नहि अछि'''जहिना हम सरकारी नोकर तहिना ओहो''''लाउ झोड़ा''''

(रीता झोड़ा आनिक' दैत छथिन नरेन्द्रक प्रस्थान)

नवम दृश्य

घूटर स्नान क' क' खूब जोर-जोर सँ दुर्गाक पाठ करैत आबिक' सोफा पर बैसैत छथि। दुर्गा पाठ चलि रहल छनि— बीच-बीच मे माछक सुगंध लेबाक अभिनय करैत छथि)

रीता —घूटर भाई'''भोजन परोसी ने ?

घूटर —हँ-हँ अहि मे किएक बिलम्ब ? नरेन्द्र स्नान केलैन ?

रीता —हँ ओहो तैयार भऽ गेल छथि।

घूटर —बौआसीन अहाँक घर मे ओ की कहैत छैक डानी टेबुल नहि देखैत छी ? हमर नूनू तऽ किरानिये छथि परन्च ओहो डानी टेबुल रखने छथि'''डानी टेबुल पर खेबाक भजे किछु आओर होइत छैक। सभटा चीज बस्तु सामने राखल रहल जेकरा''' जे''' जतेक खेबाक हो खाय''''

रीता — हमरा ओतऽ की देखब '''किछु नहि हमर पापा की नहि खरीद कऽ रखने छथि हमरा लेल''''फ्रीज, टी० भी०, पलंग, ड्रेसींग टेबुल कार तक खरीद कऽ दें लेल तैयार छथि। परन्च, ई तऽ लेना कऽ ने हमर पापा के बाजि उठैत छथिन जे'''की कहू घूटर भाई''''आब बहुत दिन तक हम नहि रहि सकैत छी हिनका संग'''

घूटर—दुर्गा-दुर्गा''' अहुना कयो सोचय''''बौआसीन भगला सँ काज चलत ? खैर''आब हम आबि गेल छी'''सब ठीक भऽ जैत''' होउ''''भोजन परोसू'''

(रीता क प्रस्थान''''नरेन्द्रक प्रवेश)

घूटर —आबह''' आबह'''' हौ मुँह किएक लटकल छह ?

नरेन्द—नहि तऽ, कहाँ ?

घूटर—तो कहबह से हम मानि जेना लेब। हौ मैथिलक घर मे जहिया-जहिया माछ बनैत छैक तहिया-तहिया तऽ ओकरा चेहरा पर सौ से संसारक खुशी रहैत छै'''' तोरा जकाँ अकाश काँकोर बनल नै रहैत अछि'''वैह देखह आबि रहल छह''''

(रीता टेवुल पर भात माछ क थारी-बाटी रखैत छथि। संग मे नोकरानी रश्मियाँ गिलास मे जल अनैत अछि।)

घूटर—शुरू करह....(किछु मंत्र बुदबुदा कऽ भोजन आरम्भ करैत छथि) ....बाह-बाह रहु ताहु पर जमीरी नेबो—बाह बड़ दिव्य... बहुत स्वादिष्ट.... बाह बौआसीन अहाँ तऽ अपूर्व भोजन बनबैत छी...बाह ...बाह....

रीता—घूटर भाई। अहि मे हम किछु नहि केलौं.... ई सभ अहि छौंड़ीक बनायल अछि।

घूटर—अँय....ई छौड़ी के?

रीता—हमर पापाक जे भंसिया छथि तकरे बेटी छै रश्मियाँ.... हे गै रश्मियाँ जो जऽग मे पानि नेने आ।

घूटर—संस्कारक असर छै—संस्कारक असर छै....

(ओमहर रश्मियाँ जऽग लऽ कऽ आबि रहल अछि कि जऽग खसि पड़ैत छै। रीता बढ़ि कऽ ओकर केश पकड़ि कऽ गाल पर थापर सँ मारैत)

रीता—तोरा सुझैत नहि छौ। खाली बदमाशी। तेहेन मारि मारबौ ने... सौंसे घर गंदा कऽ देलक....

रश्मियाँ—हम की कोनो जानि कऽ खसेलौं ए?

रीता—फेर मुँह लागल जबाब... (तरा तर मारऽ लगैत छथि)

(रश्मियाँ कानऽ लगैत अछि)

नरेन्द्र—अरे किएक बेचारी के मारि रहल छियै?

रीता—मारियै नै तऽ की? कोरा मे लऽ कऽ दुलार करियै? ई सब लातक देवता अछि....बात सँ सुनि नहि सकैत अछि...

नरेन्द्र—ओफ्फ....करू जे मोन हुए से....

रीता—(रश्मियाँ सँ) चल आब मुँह की देखैत छै? जो कपड़ा आनि कऽ पोछ सौंसे घर....

घूटर—बौआसीन—नरेन्द्र के मांछ दियौन—एक आध कुटिया हो तऽ हमरो देब...

रीता—हँ-हँ रहतै किएक नहि (जाइत छथि आ माछ आनि कऽ दैत छथिन)

घूटर—बाह....अहि ठाम तऽ माछ बड़ सुन्नर भेटैत छह तोरा सभके....हौ एतहि एकटा बढ़ियाँ घर बना लैह....हमहूँ सब कहियो काल मास दू मास आबि कऽ रहब

नरेन्द्र—भाई घर बनोनाई एतेक आसान नहि—अखन तऽ हम नौकरी शुरुये केलौं अछि....पहिने गामक घर....

घूटर—छी: छी:। गामो आब रहबाक जोगरक रहि गेल अछि....हौ बनेबाक छ तऽ एतऽ बनाबह। तोरा कथिक दिक्कत.... अपने एतेक पैघ आफिसर छह....आ ताहू सँ नहि तऽ इनजीयर साहेब जँ चाहथि तऽ आइये बनबा देथुन।

रीता—पापा....हूँ...कोन मुँह सँ पापा के कहबनि...पहिने ओ पचास हजार....

नरेन्द्र—रीता.... अहाँ नै चाहैत छी जे हम भरि पेट भोजन करी? बेर-बेर पचास हजार....(उठि कऽ भीतर चलि जाइत छथि फेर हाथ धो कऽ बाहर अबैत छथि। संग मे चेक बुक आ पास बुक छनि)। लियऽ ई पासबूक आ बैस कऽ चाटू... (बाहर दिस प्रस्थान)

रीता—नरेन्द्र.... सुनु तऽ...ओफ्फ....हमर तऽ करमे जरल अछि....भरि पेट भोजनो नै केलनि....

घूटर—आ...हा....हा अपन कर्म के दोष जुनि दी.... दुर्गा... दुर्गा जे होइत छैक से ठीके होइत छैक

(फोनक घंटी टनटना उठैत अछि। रीता बढ़िकऽ फोन उठबैत छथि।)

रीता—हेलो। Mrs. Narendra speaking.

....

ओहो....नमस्ते

....

जी

....

जी हाँ। वे तो अभी-अभी बाहर निकले हैं।

....

जी कह दूँगी।

....

जी चार-पाँच दिन के लिए

....

हूँ

... .

जी नमस्ते।

रीता—नरेन्द्र के चारि पाँच दिन के लेल टूर मे जाय पड़तनि। हिनकर साहेबक फोन छलनि....

घूटर—अच्छा बौआसीन घबरेवाक कोनो बात नै। ताधरि हम तऽ रहबे ने करब... एक आध कुटिया....

रीता—हँ हँ नने अबैत छी...

घूटर—बौआसीन माछक मूड़ा तऽ कतहु देखबा मे नहि आयल

रीता—मूड़ा खाइत छी अपने की?

घूटर—दुर्गा-दुर्गा बौआसीन हमर सार कहैत छथिन जे जेने खाय मूड़ा तकरा माथ मे भरल कूड़ा.... जतेक हो सभ नेने ने आउ....

(रीताक प्रस्थान... प्रकाश बन्न)



दसम दृश्य

(भोरका दृश्य। रश्मियाँ घर मे बाढ़नि दऽ रहल अछि। दोसर रूम सँ घूटरक आँखि मिरैत प्रवेश।)

घूटर—दुर्गा-दुर्गा.... गै रश्मियाँ एक गिलास जल पिओ।

(रश्मियाँ जाइत अछि आ जल आनि कऽ दैत छनि)

घूटर—दुर्गा-दुर्गा.... रश्मियाँ मेम साहेब उठलखुन?

रश्मियाँ—नै.... सुतले छथिन। आई साहेब नै छथिन ने तऽ दस बजे सँ पहिने नै उठथिन।

घूटर—ओ.... .... रश्मियाँ....

रश्मियाँ—जी

घूटर—एमहर सुन।

रश्मियाँ—जी.... कहू

घूटर—बैंस.... एहिठाम....

रश्मियाँ—कहू ने की कहै छी...

घूटर—अरे.... एहि ठाम बैंस ने.... हमरा लऽग

रश्मियाँ—नै सोफा पर हम नै बैंसब.... मेम साहेब मारती

घूटर—अरे सैह देख कऽ तऽ हमर करेज फाटि जाइत अछि। आ हा-हा फूलसन बच्चो के कोना चाण्डालिन जकाँ मारैत अछि ई भोगी। एकटा हमर नूनूक स्त्री छथि.... अपनो बाल बच्चा सँ नीक जकाँ नोकर-चाकर के रखैत छथि।

रश्मियाँ—साहेब ई नूनू के छथिन?

घूटर—नूनू? हमर बेटा चाईबासा मे छथि। जहिना तोहर साहेब छथुन ताहू सँ पैंघ साहेब सुन एकटा बात कहैत छियौ.... केकरो कहियहो ने.... नै तऽ मेम साहेब फेर मारती.... नै ने कहबही।

रश्मि—नै

घूटर—सुन तोहर ई दशा देखि कऽ बड़ दुःख होइत अछि। तों जँ तैयार हो तऽ तोरा हम चुपचाप नूनूक ओतऽ पहुँचा दियौ… ओना तऽ नूनू के नोकर चाकरक कोनो कमी नै परन्च हमरे बेटा छिकाह… कहबनि तऽ तोरो राखि लेथुन… दोसर के भले हटा देथिन …आराम सँ रहबे खूब नीक नीक कपड़ा-लत्ता सभक संग डानी टेबुल पर भोजना ने मारि ने पीट …बाज चलबैं चुपचाप नूनूक ओतऽ चाईबासा—

रश्मियाँ—लेकिन हमर बाबू…ओकरा पता लगतै तऽ मारत

घूटर—पता लगतै कोना…हम थोड़े कहऽ जेबै … आब तों सोचि ले… एहिठाम आधा पेट पर मारि पीट खाइत रहबाक इच्छा हो तऽ बड़ बेश…

रश्मि—गै हम चलब…मुदा हमर बाबू के साहेब मासे मास पचास टाका दैत छथिन—

घूटर—गै हमर नूनू सय टाका देथुन। से सब हम बाद मे ठीक कऽ देबौ ने…तों अखन चुपचाप रहियैं… हम जाय लागब तऽ तोरा चुपचाप नेने चलबौ… ठीक …

रश्मियाँ—ठीक…कहिया जेबै ?

घूटर—गै एतैक अगुता किएक गेलैं। स्थिर रहू। सभ हमरा पर छोड़ि दे… जो अखन अपन काज कर…दुर्गा…दुर्गा (रश्मियाँ बाढ़नि देबऽ लगैत अछि, बाहर सँ दरबज्जा ढ़कढ़केबाक स्वर।)

घूटर—गै रश्मियाँ देख तऽ…के छौ।

रश्मियाँ—दूध बला हेतै….(बढ़ि कऽ दरबज्जा खोलैत अछि फेर आबिकऽ) देखियौ दू तीन गोटे छै। (घूटर बढ़िकऽ दरबज्जा लग जाइत छथि फेर)…

घूटर—अरे अरे मास्टर… चन्द्रकान्त बाबू…आउ आउ मास्टर की हाल केने छह… (रोगियाह मास्टर साहेब के चन्द्रकान्त बाबू पकड़ने भीतर अनैत छथिन। पाछाँ-पाछाँ गेनालाल समान लऽ कऽ अबैत अछि)

चन्द्रकान्त—भाई एतहि… ताधरि… एहि सोफा पर पड़ि रहू (मास्टर के उकासी आ दर्द परेशान केने छनि। ओ सोफा पर पड़ि रहैत छथि। गेना समान राखि कऽ मास्टरक पैर दबाबऽ लगैत अछि।)

मास्टर—गे…ना… ।भरि राति तों ट्रेन मे जगले छैं। कोनो कोना मे चुपचाप

पड़ि रह…। घूटर भाई…नरेन्द्र कतऽ छथि ? (गेना ओ [illegible] एककात मे पड़ि रहैत अछि)

घूटर—नरेन्द्र तऽ टूर पर गेल छथि। हमरो कि भेट भेल नीक जकाँ। नुनुक कऽ ओतऽ सँ आपस होइत रही तऽ सोचलहुँ हिनको सभ सँ भेट केने चली। हम एमहर एलौं आ' ओ ओमहर टूर पर। जबर्दस्ती हमरा रोकि लेलनि जे हम आपस अबैत छी तखन जायब। तोरो हाल कहितियनि ततबो समय नै भेटल।

चन्द्रकान्त—घूटर। हाल समाचार कहबा मे मात्र एक सँ दू मिनट लगैत छैक …खैर, नरेन्द्रक आङ्गन सँ तऽ छथिन ने ?

घूटर —हँ…हँ सूतल छथिन…हम अखने उठा दैत छियनि।

चन्द्रकान्त—अहाँ उठेबनि ?

घूटर —नै…नै हमर कहबाक माने ई जे-उठबा दैत छियनि … रश्मियाँ…

रश्मियाँ—जी…

घूटर —जो अपन मेम साहेब के उठा दहुन। कहुन गं जे गामसँ मास्टर साहेब आ चन्द्रकान्त प्रोफेसर आयल छथि।

(रश्मियाँ भीतर जाइत अछि आ कनेकाल मे रीता के नाइटगाउन पहिरने प्रवेश)

रीता —घूटर भाई किएक हमरा उठबा देलहुँ…के आयल अछि ?

घूटर —अरे रे बौआसीन भीतरे रहू मास्टर आयल अछि

(रीता हड़बड़ा कऽ पर्दाक अढ़ भऽ जाइत छथि)

चन्द्रकान्त—बौआसीन। हम प्रोफेसर चन्द्रकान्त। हिनकर भैंसूर के जबर्दस्ती गाम सँ उठा कऽ अनने छी। नरेन्द्र तऽ नञि छथि। ताहि हेतु ई कने नीक जकाँ सुनि लेथु। मास्टर साहेबक स्थिति आइ कैक मास सँ बद सँ बदतर भेल गेलैनि अछि। पोद्दार डाक्टरक हिसाबे ई टी० बी० थीक। परन्च, हमरा इ बिश्वास नहि। भाई के कोनो आओर गंभीर रोग छनि तकर शंका अछि। तें जबर्दस्ती हम लऽ अनलियनि अछि…। भाई हम युनिभर्सीटी मे अपन मित्रक ओतऽ चलैत छी हुनको सँ परामर्शकऽ कोनो नीक डाक्टर सँ देखेबाक व्यवस्था करब।

मास्टर—भाई अहाँ किएक एतेक परेशान भS रहल छी। बौआसीन छथिहे ̈ ̈ दू एक दिन मे नरेन्द्र सेहो आबि जेताह ̈ ̈ ̈ ̈

चन्द्रकान्त—ठीक छै भाई ̈ ̈ ̈हम संध्या काल आयब। ̈ ̈ ̈ ̈। बौआसीन हिनकर भोजन भात मे काफी संयमक आवश्यकता छनि ̈ ̈ ̈ बेश, भाई तS हम चलैत छी ̈ ̈ ̈ ̈हँ घूटर, अहाँ तS एतहि रहब ̈ ̈ ̈ ̈भाई के बेशी दुर्गापाठ जुनि सुनेबैनि। (प्रस्थान)

घूटर —दुर्गा ̈ ̈ ̈दुर्गा ̈ ̈ कने पढ़ि लिखि की गेल ई परफेसर अपना के सभसँ काबिल बुझैत अछि।

(रश्मियाँक प्रवेश)

रश्मियाँ —साहेब—अहाँ के मेम साहेब बजबैत छथि।

(घूटर भीतर जाइत छथि आ' फेर कनेकाल मे आपस अबैत छथि।)

घूटर —मास्टर ̈ ̈ ̈उठह ̈ ̈ ̈ ̈बौआसीन कहैत छथुन जे पाछुबला घर मे अपन बोरिया बिस्तर लगेबाक लेल। उठह ̈ ̈ ̈ ̈रे गेना ̈ ̈ गेना ̈ ̈ ̈ केहेन भिसम मेड़ भS कS सूति रहल तुरत ̈ ̈ ̈ ̈(पैर सँ ठेलैत) रे गेना ̈ ̈ ̈ ̈गेना ̈ ̈

मास्टर —पैर सँ नहि घूटर भाई ̈ ̈ ̈ ̈पैर सँ नहि। ओकरा फूकनाक बेटा जुनि बूझू ̈ ̈ ओ हमर बेटा सँ कम नञि ̈ ̈ ̈ गेना ̈ ̈ ̈ गेना।

गेना —(हड़बड़ाइत उठैत) जी ̈ ̈ ̈ जी मास्टर साहेब

मास्टर —उठ चल ̈ ̈ ̈।

गेना —कतS मास्टर साहेब ?

मास्टर —चल ने पाछू बला घर मे हमरा पहुँचा दे। तकरा बाद तों मुँह हाथ धो कS बौआसीन सँ जलखै लS कS खा लिहें ̈ ̈ ̈ (गेना मास्टर के सहारा दS उठबैत अछि घूटर दुर्गा-दुर्गा करैत छथि कोनो सहारा नहि दैत छथि)

घूटर —रश्मियाँ, तों मास्टर के पाछू बला घर मे लS कS चल ̈ ̈हम अबैत छी।

(मास्टर, गेना आ' रश्मियाँक प्रस्थान। रीताक प्रवेश)

रीता —घूटर भाई ̈ ̈ ̈ ̈आब की करी हम ?

घूटर —बौआसीन अहाँ निश्चित ने रहू। नरेन्द्र के आबS दियौन, ओ डाक्टर, डाक्टर सँ देखेथिन ̈ ̈ तकरा बाद ने किछु ̈ ̈ ̈ ̈

रीता —हँ ̈ ̈ ̈ ̈सेह। अहाँ जे नहि कहितहुँ तS आइ हम हुनका अही घर मे राखि

लितियैनि ̈ ̈ ̈ ̈बाप रे तखन तS बड़ा अनर्थ होइत ̈ ̈ ̈ हमरा सभके टी० बी० भS जाइत।

घूटर —दुर्गा-दुर्गा ̈ ̈ ̈ ̈बौआसीन ̈ ̈ ̈ ̈मास्टरक थारी-बाटी गिलास सभ अलग कS दियौन।

रीता —घटर भाई ! ̈ ̈ ̈ परन्च नरेन्द्र के तS तामस भS जेतैनि।

घूटर —अरे अहाँ निश्चित ने रहू। हम सब सम्हारि देब। हँ बौआसीन ̈ ̈ ̈ ̈ एमहर सुनू ̈ ̈ ̈अहाँ के कहि दैत छी ̈ ̈ मास्टर के टी० बी० तो० बो० नहि छैक, पोद्दार डॉक्टर हमरा गामे मे कहने छल जे मास्टर के कैंसर छै।

रीता —कैंसर !

घूटर —हँ, ताहि दुआरे ओ चन्द्रकान्त परफेसर के जोर दS कS एतS पठबेलकैनि अछि। परफेसर के सेहो बुझल छै, परन्च, मास्टर के टी० बिये कहने छै पोद्दार डॉक्टर ̈ ̈ ̈

रीता —बाप रे ̈ ̈ हमर तS करमे जरल अछि ̈ ̈ ̈ कतS पापा बियाह कS देलनि ̈ ̈ ̈ ̈ अखन बियाह भेना सालो नहि पुरल अछि आ' ई कैंसर बला सभक फेरा मे पड़ि गेलहुँ ̈ ̈ ̈ हम आब एतS नहि रहब। आइये पापा लS ग चलि जैब।

घूटर —दुर्गा-दुर्गा ̈ ̈ ̈ बौआसीन एतेक अगुताइ जुनि। नरेन्द्र के आबि जाय दियौन ̈ ̈ तखन कोनो फैसला करब। जाउ भोजन भातक ओरियाओन करबाउ मास्टर आ' ओकरा संग एकटा टेलहा जे छै गेना, तकरो ने भोजन बनबS पड़त आइ सँ। ̈ ̈ हम कने मास्टर के देखने अबैत छियै, दुर्गा ̈ ̈ ̈दुर्गा (प्रस्थान)

रीता —(किछु सोचि कS फोन लगबS लगैत छथि)
हेलो ̈ ̈ ̈हेलो ̈ ̈ ̈ हँ पापा ̈ ̈ ̈ हँ ̈ ̈ ̈ अहाँ जल्दी एतS आउ ̈ ̈ ̈ ̈ने आउ तखन कहब ̈ ̈ ̈कहिया ? ̈ ̈ ̈ ̈परसू ̈ ̈ ̈ ̈अवश्य

(प्रकाश बन्न होइत अछि)

ग्यारहम दृश्य

(सर्वेन्ट रूमक दृश्य। एकटा खाट पर मास्टर पड़ल छथि। गेना पैर जाँति रहल छनि। रश्मियाँ ठाढ़ अछि)

घूटर —(प्रवेशक संग) की हौ मास्टर,''''जगह पसिन्न छह कि नै ?

मास्टर —घूटर भाई, ई तऽ ''

घूटर —हँ हौ मास्टर ई तऽ नोकर-चाकर के रहयवला घर छैं। बौआसीन के कोन ज्ञान छनि से नहि जानि। लाख बुझेलियैनि जे मास्टर के कतेक दुःख हेतैनि तऽ ओ कहऽ लगली जे अई घर मे कोना रखियैनि। टी० बी० छनि आर नहि जानि कोन-कोन बिमारी छनि। डऽर होइत छनि कहीं हुनको सभके ने धटि जाइन।''' हमर तऽ करेज फाटल जा रहल अछि दुर्गा दुर्गा (प्रस्थान)

मास्टर —ओह''''घटर भाई'''पता नहि आब कतेक दिन रहब एहि संसार मे'''' एवाक एवकोरती इच्छा नहि छल। नरेक भौजी आ ई चन्द्रकांत भाई ठेलिठालि कऽ जबरदस्ती पहुँचा देलनि '' आह'' आह''' (खूब जोर सँ पेट मे दर्द उठैत छनि)

गेना '''गेना''''पानि''''पानि

गेना —मास्टर साहेब'''मास्टर साहेब

(ता धरि रश्मियाँ भीतर सँ जल आनि कऽ दैत छनि। मास्टर जल पिबैत छथि। कने काल बाद शान्त होइत छथि)

मास्टर —गेना '''रौ ई दर्द''' ई दर्द प्राण लऽ कऽ छोड़त''''

गेना —मास्टर साहेब''''अहाँ आराम करू'''हम माथ दबा दैत छी (माथ दबाबऽ लगैत अछि)

रश्मियाँ —तोहर नाम गेना छौ ?

गेना —हँ।

रश्मियाँ —आब तौं सभ एऽत रहबौ ?''''''''। हम एहि घर मे रहै छी''''। कहैत छे मेम साहेब जे भाई के नोकर बला घर मे ठेल देलकै यै'''' (कहैत प्रस्थान)

गेना —हम मास्टर साहेब के एतऽ नहि रहऽ देबैनि। मास्टर साहेब''''मास्टर साहेब।

मास्टर —हूँ''''

गेना —चलू एतऽ सँ। गाम चलू अहाँक बिजली हमरा नीक नहि लगैत अछि।

मास्टर —गेना''''गेना तोंहीं हमर सभ किछु छें''' गेना, भगवान तोहर सभ मनो-कामना पूरा करथुन'''

गेना —मास्टर साहेब'''हम अहाँक खूब सेवा करब भगवान के कहबनि अहाँ गामे मे नीके भऽ जैब।

मास्टर —गेना '''आबि गेलहुँ तऽ दू चारि दिन बचि जा''''नरे आबि जाइत छथि, तऽ भेंट भऽ जायत। (प्रकाश बन्द)

बारहम दृश्य

(सर्वेन्ट रूम मे प्रकाश, रश्मियाँक संग नरेन्द्रक प्रवेश। रश्मियाँ हाथ सँ इशारा कऽ कऽ देखबैत छनि। गेना मास्टरक पैर दबबैत रहैत छनि। नरेन्द्र बढ़ि कऽ पैर पकड़ि लैत छथि।)

नरेन्द्र —भाई,''''भाई हमरा माफ कऽ दिय भाइ'' ई की हाल भऽ गेल अहाँक भाई''''?

मास्टर —नरेन्द्र'''' नरेन्द्र''''

नरेन्द्र —भाई अहाँके एहिठाम के रखलेलक ? हम ओकरा कहियो क्षमा नहि कऽ सकैत छी। भाई '''

मास्टर —नरेन्द्र होश मे आउ''''हम''''हम तऽ कष्ट मे छीहे''''अहाँ एना करब तऽ हमरा बड़ दुःख हैत।

नरेन्द्र —भाई''''अहाँ एतेक बीमार छी ''''एकोटा पत्र नहि'''

मास्टर —नरे''''हम आ' अहाँक भौजी तऽ कम सँ कम दसटा पत्र देने होयब'''' अहाँक जबाब नहि भेटल'''

नरेन्द्र —दसटा पत्र ! सत्ते कहैत छी भाई…हमरा हाथ मे एकोटा पत्र नहि भेटल…भाई पहिने उठू घर मे चलू…

मास्टर —नहि नरेन्द्र…हम एतहि ठीक छी…

नरेन्द्र —नहि भाई नहि…एतेक पैघ दण्ड नहि दिय हमरा।

मास्टर —नरे…बच्चा जकाँ जुनि करू…बौआसीन जे केलनि से नीके केलनि अछि…हम एतहि ठीक छी आब अहाँ आबि गेलहुँ…कोनो नीक डाक्टर सँ देखा दिय जे जल्दी सँ आपस गाम चलि जाइ।

नरेन्द्र —ई की कहि रहल छी भाई ? …हम जनैत छी अहाँ हमरा सँ बड़ तमसायल छी… परन्च, आब जा धरि अहाँ पूर्णरूप सँ ठीक नै भऽ जैब… हम नहि जाय देब…भाई उठू…चलू घर मे…

मास्टर —नरे…जिद नहि करी…आह…आह…हम एतहि ठीक छी…

नरेन्द्र —ठीक छै…तऽ हमहूँ एतहि रहब…जतहि अहाँ रहब…सैह हमरो घर थीक।…भाई…अहाँक मोन एतेक खराब…

मास्टर —धीरे-धीरे भऽ गेल…ई खोंखी आ पेटक दर्द तऽ बुझाइल अछि प्राण लऽ लेत…हमरा तऽ अयबाक ईच्छा नहि छल परन्च अहाँक भौजी आ चन्द्रकान्त भाई…

(चन्द्रकान्तक प्रवेश

चन्द्रकान्त—की यौ भाई…हमरा किएक याद कऽ रहल छी ? ओह नरेन्द्र अहाँ आबि गेलहुँ।

नरेन्द्र —जी आबिए रहल छी। (चन्द्रकान्त के एक दिस लऽ जा कऽ) चन्द्रकान्त भाई…भाई के की भऽ गेल छनि ? किछु…

चन्द्रकान्त—घबराउ जुनि…कोनो खास नहि। गाम घरक गप्प, ने नीक डाक्टर, ने नीक दबाई…धीरे-धीरे रोग बढ़ि गेल छनि…अहाँ जाउ फ्रेश भऽ जाउ तकरा बाद बिचार-बिमर्श कऽ कऽ नीक डाक्टर सँ कन्सल्ट कैल जेतै।

नरेन्द्र —हम की फ्रेश हैब…हम ठीके छी…

मास्टर —नरे…जाउ कपड़ा लत्ता बदलि कऽ आउ…जाउ

नरेन्द्र —जी…जी (प्रस्थान)

तेरहम दृश्य

(नरेन्द्र आबि कऽ अपन [illegible] छथि। हुनकर [illegible] ड्राइंग रूम मे राखल छनि। [illegible] ताबत रीताक घूटर भाईक संग हँसैत प्रवेश। [illegible] रहल अछि जे ओ मार्केटिंग कऽ कऽ आबि रहल [illegible] छथि)

रीता —हाय नरेन्द्र…[illegible] रहल छी…देखू ने आइ पापा [illegible] लेल आ' गीताक लेल किछु आवय [illegible] पापाक संग पठा देबै। अहाँक कपड़ा [illegible]—देखू ने कपड़ा घूटर भाई के [illegible] अछि ? ([illegible])

नरेन्द्र —रीता, …। हमर [illegible] एको पाइ लाज नहि [illegible] ? हमर [illegible] नाजायज फायदा। अहाँ…?

रीता —नाजायज फायदा की ? आ अइ मे लाज केहेन। हुनका जेहेन केहेन बिमारी छनि…एहिठाम रखबा मे हमरा भऽ जाइत तऽ ?

नरेन्द्र —रीता…अहाँ एतेक हद तक नीचाँ खसि सकैत छी से हम सपनो मे नै सोचने छलहुँ। हमर भाई सर्वेन्ट क्वाटर मे दर्द सँ तड़पि रहल छथि आ' अहाँ अपन माय आ' बहिनक लेल कपड़ा खरीदऽ लेल गेल रही… छी—छीः छी

घूटर —गुर्री…दुर्गी…ही नरेन्द्र कने शांत भऽ जाह।

नरेन्द्र —की शान्त भऽ जाउ। हमरा देहमे तऽ आगि लागल अछि…हिनकर तऽ बुद्धि मारल गेलैनि अछि… परन्च, घूटर भाई अहाँ तऽ एतऽ रही… अहाँ तऽ हिनका बुझा सकैत छलियैनि

रीता —हँ…हँ…हमर बुद्धि मारल गेल…तेँ हम कैंसर आ टी० बी० बला के अपन घर मे नै रखबै आ नै तऽ अहाँ के ओतऽ जाय देब।

नरेन्द्र —कैंसर ?

रीता —हँ…हँ कैंसर…

नरेन्द्र —हे भगवान । ई की सुनैत छी । हमर देवता सन भाई के कैंसर''' । (रीता सँ) अहाँ चाण्डालिन छी''' हमर भाईके एहि स्थितिक लेल अहीं जिम्मेबार छी''' कहू हमर भाईक चिट्ठी सभ हमरा किएक नहि देलहुँ'''बाजू—बजैत किएक नहि छी''' ?

(घूटर चुपचाप ससकि जाइत छथि)

रीता —चो'''ट्ठी''को'''न चि'''ट्ठी ?

नरेन्द्र —झूठ नहि बाजू'''रश्मियाँ सँ पता लागि गेल अछि'' बराबर चिट्ठी अबैत छल परन्च, आइ धरि'''आइ धरि हमरा हाथ मे एकोटा चिट्ठी नहि भेटल'''किएक'''बाजू'''कतऽ अछि चिट्ठी सभ ?

रीता —चिट्ठी सभ के हम फाड़ि देलौं—

नरेन्द्र —हमर भाईक जिनगी आ मृत्युक सबाल छल आ' अहाँ चिट्ठी सभके फाड़ि देलहुँ'''

रीता —हूँ''जिनगी आ मृत्यु'' अहाँक भाई जिबथि या मरथि ताहि सँ हमरा की ?

नरेन्द्र —रीता'' (कसिकऽ गालपर थापर मारैत छथि)

रीता —अहाँ...अहाँ हमरा थापर मारलहुँ'''अहाँक ई मजाल जे हमरा थापर मारब (खूब जोर सँ कानऽ लगैत छथि। नरेन्द्र निकलि कऽ चलि जाइत छथि। प्रकाश धीरे-धीरें बन्न होइत अछि।)

चौदहम दृश्य

प्रकाश सर्भेन्ट रूम मे। नरेन्द्र अबैत छथि आ' आबि कऽ मास्टर लऽग बैसि रहैत छथि। ओतऽ घूटर पहिने सँ रहैत छथि

नरेन्द्र—(चन्द्रकान्त सँ) भाई कने'''एमहर सुनू तऽ'''भाई कि ई कैंसर'''?

चन्द्रकान्त—नरेन्द्र'''एतेक हतोत्साहित जुनि होउ''' हँ पोद्दार डाक्टर के सत प्रतिशत शंका छनि जे ई कैंसर थीक। तँ हम मास्टर के जबर्दस्ती उठा कऽ लऽ अनलियनि। अहाँक एबसेंस मे हम कोनो डाक्टर सँ देखा सकैत रहियैनि परन्च, हम अहाँक प्रतीक्षा करब उचित बूझल।

(रश्मियाँक हाँफैत प्रवेश)

रश्मियाँ—साहेब'''साहेब'''मेमसाहेब'''मेमसाहेब

नरेन्द्र—अखन हमरा फुर्सत नहि अछि। जो कहि दिहुन जे हम भाई के लऽ कऽ डाक्टर के ओतऽ जा रहल छी।

रश्मियाँ—साहेब'''मेमसाहेब शीशी मे सँ कौनदन दबाई खा लेलखिन''' आ'''' आ' एकदम दर्द सँ छटपटा रहल छथिन'' कहैत छथिन हम मरि जैब हम मरि जैब।

नरेन्द्र—की ?

मास्टर—नरे जल्दी जाउ'''पहिने बौआसीन के देखियौन (नरेन्द्र आगाँ आगाँ आ पाछाँ सऽ चन्द्रकान्त आ घूटर सेहो जाइत छथि)

(प्रकाश बन्न)

पन्द्रहम दृश्य

(सर्भेन्ट रूम मे प्रकाश, चन्द्रकान्त सेहो बैसल छथि)

चन्द्रकान्त—भाई बुझू तऽ आइ बौआसीन बचि गेली आ' प्रतिष्ठा सेहो बचि गेल। कहुँ तऽ बौआसीन ई की केलैनि। पति-पत्नी मे झगड़ा झंझट कतऽ नै होइत छै जे बौआसीन छोट-छीन बात लऽ कऽ सोझे जहर खाऽ कऽ आत्महत्या करऽ गेलीह। गनीमत छलै जे ओ मच्छर मारऽ बला दवाई रहै सेहो पुरान, बेसी स्ट्रांग नहि। नहि तऽ आइ जुलुम भऽ जाइत। आ' ई नरेन्द्र के सेहो नेनमति नहि गेलनि अछि। मारि'''पीह'''छी''' छी'''छी'''

मास्टर—भाई'' भाई''' भाई बड़ दर्द करैत अछि आह गेना''' गेना''' गेना पानि पिओ'' (गेना पानि आनि क दैत छन्हि) आह''' भाई'' भाई एहि सभ फसादक जड़ि हम छी'''' हमरा'' हमरा'''आइये गाम पहुँचा दिय'''

चन्द्रकान्त—भाई'''अहाँक स्थिति ई नहि अछि जे अहाँ गाम जाइ'''

मास्टर—नहि भाई''''नहि आब हम अहाँक गप्प नहि सुनब। आब जे हैत से गामे मे हैत—

घुटर—(प्रवेशक संग) ठीके हौ मास्टर'''हमहूँ आब एक क्षण नहि रहि सकैत छी''' दुर्गा''''दुर्गा एहेन''''एहेन कांड सभ होइत अछि'''

चन्द्रकान्त—काण्ड''' हूँ''' मास्टर एहि सभ फसादक जड़ि अहाँ अपनाकेँ बुझैत छी, परन्च वास्तव मे फसादक जड़ि छथि'''यैह घूटर''''

घुटर—दुर्गा'' दुर्गा''' ई की कहैत छी यौ परफेसर?

चन्द्रकान्त—ठीक कहैत छी''''पहिने तऽ मास्टर के पोटि पाटि कऽ इंजिनियर साहेबक ओतऽ विवाह करबौनाई। झूठ-मूठ सौंसे प्रचार जे एक लाख टाका मास्टर लेलनि भाईक विवाह मे।''''आ' ताहू सँ अहाँक पेट नहि भरल तऽ एहिठाम बौआसीन के बुद्धि देनाइ'''

घुटर—झूठ''''एकदम झूठ''''अहाँक सत्यानाश हो जे हमरा पर एहन कलंक''''

चन्द्रकान्त—सत्यानाश तऽ सौंसे गामक कऽ रहल छियै अहाँ। ठीके अहाँके लोक लौंगिया मिरचाइ कहैत अछि''''बापरे एहन कड़ जे सोझे करेजा तक के बेध दिए'''

घुटर—देखू परफेसर''''अहाँ हद सँ आगाँ बढ़ि रहल छी। मास्टर अपन मोन सँ भाईक विबाह ठीक केलनि पैघ आदमी कतऽ। आब ओकर फल भुगति रहल छथि तऽ हमर कोन दोष''''?

चन्द्रकान्त—हँ''' ई दोष तऽ मास्टरक अवश्य छनि जे ओ स्टेटस तावय लगलाह'''' इ नहि बुझलनि जे स्टेट्स बलाक बेटी हिनकर टुटली मरैया मे कोना कऽ रहतैनि''''आइ कालि''' दहेजक एकटा इहो रूप अछि जे कतेको घर के बर्बाद कऽ दैत अछि''' परन्तु, घुटर अहाँक प्रतिभा बिलक्षण अछि'''

मास्टर—भाई चुप भऽ जाउ''

चन्द्रकान्त—नहि भाई''''आइ बहुत दिन सँ हिनकर चालि हम गाम सँ एतऽ धरि देखैत चलि आबि रहल छी'' ओहि दिन जखन रश्मियाँ सँ पता लागल जे यैह घूटर बौआसीन के समझा बुझा कऽ अहाँके एहि सर्भेन्ट क्वाटर मे रखबेलैनि तऽ हमर तऽ देह जरि गेल''''मोन तऽ होइत अछि हिनका तत्त मारि मारी जे''''

घुटर—परफेसर'''तोरा देख लेबौ''' बड़ जे काबिल''''

चन्द्रकान्त—खबरदार जे फेर आगू बजलौ''''अरे अहाँ हमरा की देखब? गामक कतेको घर मे अहाँ आगि लगौने छी''''हमरो घर बर्बाद करऽ चाहब से नहि हैत'' परन्च, आब जँ अहाँ एको शब्द बजलौं तऽ हम अहाँक टाँग तोड़ि देब भागू''' भागू एतऽ सँ''''

(घूटर के धक्का दऽ कऽ बाहर करैत छथि)

मास्टर—भाई नाहक मे''''

चन्द्रकान्त—किछु नाहक नहि''''ई एहि पातक छथि। भाई नरेन्द्र के आबऽ दियौन''''हम अहाँके एतऽ सँ लऽ चलब'''नर्सिंग होम मे राखब''' यैह नै हैत जे एकाध बिगहा गामक जमीन बेचऽ पड़त'''बेचब'''मित्रक लेल तऽ लोक की की नञि करैत अछि'''

मास्टर—भाई'' भाई

(पेट मे दर्द उठि जाइत छनि''' चन्द्रकान्त आ गेना सम्हारैत छथिन। प्रकाश बन्न होइत अछि)

सोलहम दृश्य

(ड्राइंग रूमक दृश्य घूटर अपन कपड़ा लत्ता सरिया रहल छथि। जयबाक उपक्रम छनि''' दिवाकर बाबुक रीत''''रीता करैत प्रवेश घुटर के देखितहि''')

दिवाकर—आ-हा-हा-हा नमस्कार—नमस्कार घूटर बाबू बहुत दिन पर भेंट भेल। अरे अपने इ झोड़ा झपटा''''

घूटर—बहुत भऽ गेल '''''''बहुत भऽ गेल''''आबहम आओर बैजती बर्दास्त नहि कऽ सकैत छी'''हमरा जाय दिय''' (जेबाकउपक्रम मे)

दिवाकर—अरे''''एना कोना चलि जायब। हम एलौं आ' अहाँ चलि जायब'''' के केलक अहाँक बैजती ? की रीता सं कोनो''''?

घूटर—दुर्गा'''दुर्गा ओ बेचारी तऽ साक्षात् दुर्गा छथि।'''कतेक खातिर केलनि परन्च''''

दिवाकर—कतऽ छथि रीता ? रीता''''रीता''''

घूटर—इनजीयर साहेब'''एहिठाम घोर अनर्थ भेल अछि। बौआसीन जहर खा लेलनि''''

दिवाकर—की ? की कहैत छी ? जहर''''?

घुटर—जी ! ओ तऽ बुझु जे हम एतऽ रही जे सभ बचि गेल''' डाक्टर भोर सँ एतऽ रहथि''' आब सुतय बला सूइ दऽ कऽ गेल छथि''''बौआसीन ओहि घरमे सूतल छथि''''

(दिबाकर ओह भाई गॉड कहैत भीतर जाइत छथि। घुटर दुर्गा–दुर्गा करैत रहैतछथि। कनेकाल मे दिबाकर भीतर सँ अबैत छथि)

दिवाकर—घूटर बाबु''''हमरा सच-सच कहू''' इ कोना भेल?

घुटर—आब जाय दियौ इनजीयर साहेब। भगवान के धन्यवाद दियौन जे बेटी बचि गेलीह''''

दिवाकर—घूटर बाबू हमरा सच सच कहू इ कोना भेल ? के एहि लेल जिम्मेदार अछि '''नरेन्द्र कतऽ छथि ? अहाँ बजैत किएक नहि छी ?

घूटर—की बाजू ? नरेन्द्र तामसे बौआसीन के दू चारि थापर लगा देलनि। बौआसीन बर्दास्त नहि कऽ सकलीह आ' मच्छर मारऽ बला दबाई''''

दिवाकर—नरेन्द्र के ई हिम्मत ! ओ हमर फूल सन बच्ची के मारलनि ?''' कतऽ छथि नरेन्द्र ?

घूटर—धैर्य राखू''' इनजीयर साहेब नरेन्द्र के कोन दोष''''पता नहि मास्टर की सभ सिखा पढ़ा देल कैनि''''

दिवाकर—मास्टर''''घूटर बाबू''' अहाँ पहेली जुनि बुझाउ। हमर देह मे आगि लागल अछि''''पूरा गप्प कहू''''

घूटर—सैह तऽ कहि रहल छी'''' नरेन्द्रक परोक्ष मे मास्टर एतऽ चारिम दिन आयल''बौआसीन ओकर रहबाक व्यबस्था पाछूबला घर मे करबा-देलखिन''''ताहि लेल''''

दिबाकर—ओ''''तऽ मास्टर ओतऽ छथि''' ओ की बुझैत छथि अपना के ? (बजैत प्रस्थान। पाछू पाछूघूटर सेहो जाइत छथि। प्रकाश बन्न)

सत्रहम दृश्य

(सर्भेन्ट क्वाटर। मास्टर पड़ल छथि। चन्द्रकान्त। गेना बिछाओन समेट कऽ बान्हि रहल अछि। दिबाकर बाबूक हहायल फुफिआयल प्रवेश)

दिबाकर—मास्टर, अहाँ के हम नीक लोक बुझैत रही, परन्च अहाँ अप्पन स्वार्थक लेल हमर बेटीक घर उजाड़ऽ पर लागि गेलहुँ''''छी''''छी'''छी'''

मास्टर—दिवाकर बाबू'''

दिबाकर—खबर दार''''अपन गन्दा जुबान सँ हमर नाम नहि लिय''''आइ जँ हमर बेटी के किछु भऽ गेल रहैत तऽ हम अहाँ के गोली मारि दितहुँ। आब नीक अही मे अछि जे अहाँ अपन रस्ता पकड़ू आ' भविष्य मे फेर कहियो हमर बेटीक घर दिस जुनि ताकू'''

घूटर—दुर्गा''''दुर्गा'''दिवाकर बाबू ? एतेक तामस ठीक नहि। मास्टर अपनेक कुटुम्ब अछि'''

दिवाकर—की कुटुम्ब यौ घूटर बाबू ? कुटुम्बक इएह काज जे हमर बेटीक घर उजाड़य ?

चन्द्रकांत—दिवाकर बाबू····बहुत काल सँ हम सुनि रहल छी····अहाँ पँच लोक भS सकैत छी परन्च बुद्धि निम्न स्तरक अछि·· एकटा बिमार व्यक्ति सँ कोना गप कैल जाइत छैक सेहो ज्ञान नहि अछि···

दिवाकर—अहाँ हमरा ज्ञान सिखायब ? हम अहाँके नहि जनैत छी परन्च अहाँ जे क्यो होइ, हमर बेटीक घर सँ तुरत निकलि जाइ····अन्यथा

मास्टर —(उठिकS ठाढ़ होइत) भाई चलू···आब बहुत भS गेल··· दिवाकर बाबू हमरा गलत जुनि बूझू····अपनेके हम बहुत आदर करैत छी···आ' तहिना बौआसीन आ नरेन्द्र सँ स्नेह अछि····

दिवाकर—अरे जाउ जाउ बहुत स्नेह देखलौं। सौंसे इलाका मे प्रचार केने छी···· बहुत नीक मास्टर···बहुत दयाबान····हूँ····हमर बेटीक लेल तS हैवान····

मास्टर —दिवाकर बाबू···अहाँ हद सँ आगाँ बढ़ल जा रहल छी···आह···आह (दर्द उठि जाइत छनि)

चन्द्रकांत—भाई····पड़ि रहू····

मास्टर —नहि भाई····आब की पड़Sब···चलू। अहि ठाम आब एक-एक क्षण पहाड़ बुझाइत अछि····

दिवाकर—हूँ···हूँ···जाउ। मुदा कहि दैत छी···भबिष्य मे फेर कहियो हमर बेटीक घर दिस नहि ताकब···

चन्द्रकांत—दिवाकर बाबू अहाँ जे कS रहल छी तकर फल एक दिन अहीं भुगतब··· अहूँ सँ बेसी अहाँक बेटी भुगतती····। परन्च, एकटा बात कान खोलि कS सुनि लिय···अहि घूटर सँ सावधान रहब। हिनका गामक लोक लौंगिया मिरचाई कहैत छनि। लौंगिया मिरचाई जेकरा खेबाक इच्छा तS सभके होइत छैक····परन्च खेलाक बाद तेहेन कड़ लगैत छैक जे लोक के कना दैत छै···

घूटर—दिवाकर बाबू···देखि लिय····ई प्रोफेसर अहाँक सोझा मे हमर केहेन बेंजती कS रहल अछि···हमर नूनू जँ एतS रहितथि तS हिनकर टाँग हाथ तोड़ि कS धS दैतथि···(बजैत प्रस्थान)

दिवाकर—शान्त होउ ···घूटर बाबू कने शान्त होउ····(चन्द्रकान्त सँ) अहाँ हमरा कि लोक के चिन्हायब ? पहिने अपना के चिन्हू ···के लौंगिया मिरचाइ अछि से हमहूँ बुझैत छी····आ' हे हमरा कि हमर बेटी के एतेक कमजोर जुनि बूझू···

चन्द्रकान्त—हँ ठीक कहैत छी····अहाँक बेटी कमजोर किएक रहती···ओहो तS लौंगिया मिरचाइ सँ कम नहि छथि····

दिवाकर—जुआन सम्हारि कS बाजू ····नहि तS आइ एतS···

चन्द्रकान्त—दिवाकर बाबू हमर गप अपने कें अधलाह लागि रहल अछि·· परन्च बाद मे बुझबै जे हमर गप्पक की अर्थ। ···ई घूटर सनक व्यक्ति जे प्रायः प्रत्येक गाम मे रहैत छथि···ककरो नीक नहि देखि सकैत छथि ···आइ ई अहाँक प्रिय पात्र छथि परन्च, काल्हि इ अहींक जड़ि खोदS लगताह। एकटा बात आओर····अपने सनक सो कोल्ड पाइ बला लोक अपन पाइक जोर पर जेहेन लड़का चाहैत छी उठा अनैत छी····' आ ओ लड़का आ जँ संस्कारी रहल तS दू तरहक स्टैन्डरक बीच भरि जिनगी पिसाइत रहैत अछि····ओकर वैवाहिक जीवन सुखमय नहि रहैत छैक। आशा अछी अहाँ अपन दोसर बेटीक विवाह मे अहि बातक ध्यान राखब····

मास्टर—भाई···शांत रहू····बहसक कोन आवश्यकता ···चलू····

(नरेन्द्रक प्रवेश)

नरेन्द्र—भाई चलू···टैक्सी लS अनलहुँ··· डाक्टर सँ समय (ससुर पर दृष्टि पड़ैत छनि) ओह अपने एतS···

दिवाकर—हँ हम एतS····हमरा देखि हदास किएक उड़ि गेल···हमरा देखि कS अहाँ दूनू भाईक प्लान गड़बड़ा गेल की ?

नरेन्द्र—प्लान ···केहेन प्लान ?

दिवाकर—वाह केहेन अनजान बनि रहल छी ? दूनू भाइ मिलि कS हमर बेटीक प्राण लेबापर लागल छी आ' कहैत छी कोन प्लान ?

नरेन्द्र—दिवाकर बाबू ····होश मे बात करू। हमर देवता सनभाई पर एहन कलंक···

मास्टर—(डँटैत) नरेन्द्र सभ शिक्षा घोड़ि कS पीबि गेलहुँ छी: छी: छी… ससुर पिता तुल्य होइत छथि … अहि तरहक व्यवहारक अहाँ सँ आश नहि छल…

नरेन्द्र—भाई…भाई हमरा क्षमा कS दियS

मास्टर—क्षमा हमरा सँ नहि… अपन ससुर सँ मांगू …(चन्द्रकान्त सं) भाई चलू…गेना उठा समान…

नरेन्द्र—भाई ई कि ? अहाँके डाक्टर ओलS लS जेबाक लेल हम टैक्सी अनने छी

मास्टर—ओहि टैक्सी सँ हम स्टेशन चलि जायब…

नरेन्द्र—नहि भाई नहि ई नहि भS सकैत अछि…हम अहाँके एहि हाल मे नहि जाय देब…(पैर पकड़ि लैति छथि)

मास्टर—नरेन्द्र होश मे आउ…हमरा जयबाक अछि…गाम मे अहाँक भौजी प्रतीक्षा करैत हेती…

नरेन्द्र—नहि भाई नहि…

मास्टर—अहाँके अहाँक भौजीक सप्पत। हमरा जुनि रोकी…

नरेन्द्र—भाई !

मास्टर—हँ…अहाँ जाउ बौआसीन के देखियौन…हुनका हमरा अएला सँ बहुत कष्ट भS गेलनि…। गेना…गेना…कने हमरा सहारा दे (गेनक कन्हा पर हाथ राखि बढ़बाक उपक्रम)

नरेन्द्र—(मास्टर के पकड़ैत) भाई हम अहाँके पहुँचा दैत छी…

मास्टर—नहि नरेन्द्र अहाँ जाउ आब तS इएह गेना हमर सहारा थीक… भाइ चलू… (गेनाक कन्हाक सहारा लैत मास्टर आ' पाछू पाछू चन्द्रकान्तक प्रस्थान करबाक मुद्रा। नरेन्द्र खाट पर बैसि कानय लगैत छथि… सभ पात्र स्थिर… प्रकाश बन्न होइत अछि

☐ ☐ ☐

समाप्त